तृतीय अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध-दांपत्य जीवन के संदर्भ में''

तृतीय अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध : दांपत्य जीवन के संदर्भ में''

प्रास्ताविक -

विश्व में जो कुछ रिश्ते, नाते हैं वे सभी स्त्री-पुरूष से संबंधित हैं । फिर चाहे वे संबंध दांपत्य जीवन के रूप में हो, चाहे भाई-बहन के रूप में हो या सिर्फ काम के लिए हो । सभी संबंध स्त्री-पुरूष से संलग्न हैं । स्त्री-पुरूष संबंध मानवीय जीवन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष है । सृष्टि का अस्तित्व ही स्त्री-पुरूष के संबंधों पर निर्भर करता है । भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी के दांपत्य जीवन को एक महत्त्वपूर्ण स्थान है । सिर्फ पति-पत्नी का जीवन ही दांपत्य जीवन माना जाता है । जब भी कभी इन दोनों के बीच कोई तीसरा व्यक्ति आता है तब वह दांपत्य जीवन को बहुत बड़ी चुनौती होती है । यदि विवाह के बाद भी पत्नी का पति के सिवा अन्य किसी के साथ यौन संबंध स्थापित हो जाता है तब समाज उसे बर्दाश्त नहीं करता । विवाह के बाद चाहे पत्नी के हो या पति के, अवैध यौन संबंध सुखमय दांपत्य जीवन को एक बहुत ही कड़ी चुनौती है । इसलिए दांपत्य जीवन को सफल बनाने के लिए पति - पत्नी में निष्ठा, एकरूपता तथा अशेष प्रेम आदि का होना आवश्यक है ।

मोहन राकेश जी के 'अंधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल,' 'अन्तराल और 'काँपता हुआ दरिया' आदि उपन्यासों में सुखमय दांपत्य जीवन की अपेक्षा दुखमय दांपत्य जीवन का अधिक चित्रण हुआ है । इन उपन्यासों के पात्र अपने दांपत्य जीवन में कृत्रिम शांति लाने का प्रयत्न करते हैं परंतु उसमें उन्हें सफलता नहीं मिलती । भारतीय समाज में स्त्री का पति के प्रति संपूर्ण समर्पण ही उसे उच्च कोटि पर प्रतिष्ठित करता है । किंतु आज के समाज में दांपत्य जीवन में बिखराव नजर आता है । समाज में पुरूष को परिवार-प्रमुख के रूप में और नारी को गृहणी के रूप में अनन्य साधारण महत्त्व है । परंतु जब दोनों भी अपना आदर्श छोड़ते हैं तब परिवार में सुखशांति की अपेक्षा दु:ख ही ज्यादा पनपने लगता है । आज के आधुनिक युग में पति-पत्नी के संबंधों में परिवर्तन नजर आ रहा है । राकेश जी के उपन्यासों में प्राप्त दांपत्य जीवन भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं । ओम प्रभाकर के अनुसार ''मोहन राकेश के उपन्यासों का मूलाधार दांपत्य जीवन हैं ।''[1] यहाँ विवेच्च उपन्यासों में प्राप्त स्त्री-पुरूष संबंधों का दांपत्य जीवन के संदर्भ में विवेचन प्रस्तुत हैं ।

3.1 'अंधेरे बंद कमरे' में दांपत्य जीवन -

3.1.1 हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन -

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास की पहली दंपत्ति है हरबंस और नीलिमा । दोनों मध्यवर्गीय परिवार के पात्र हैं । दोनों भी सुशिक्षित और पढ़े लिखे हैं । हरबंस दिल्ली के एक कॉलेज में इतिहास का अध्यापक है । नीलिमा भी एक अच्छे खासे और सुसंस्कृत परिवार की लड़की है । उसका विवाह पूर्व नाम सावित्री था । विवाह के बाद ही हरबंस ने उसका नया नाम नीलिमा रखा था । हरबंस आधुनिक विचारोंवाला आदमी है । डॉ. कुसुम पुरी/ अंसल के अनुसार - "हरबंस उन कुछ आधुनिक व्यक्तियों में से है जिनके हृदय में आधुनिकता के प्रति आकर्षण तो है पर वे अपनी परंपरागत संस्कृति को भी हृदय से किसी कोने में संजोये हुए है । नीलिमा के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास से उसके अपने अहं को ठेस पहूँचती है ।"[2] वह अपनी पत्नी को नृत्य, चित्रकला, सिगरेट पीना, शराब पीना आदि बातों की ओर अभिमुख करता है । इन दोनों के विचारों में एकता नहीं है । नीलिमा अपना नाम कमाना चाहती है । वह पेंटिंग तथा नृत्यकला के दूवारा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहती है ।

नीलिमा का व्यक्तित्व हरबंस के व्यक्तित्व से बिल्कुल उल्टा है । नीलिमा के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए नेमिचन्द्र जैन लिखते हैं - "नीलिमा आत्मोपलब्धि के लिए संघर्ष में लगी है, बेचैन है, रास्ता नहीं पाती और छटपटाती रहती है । वह परम्परा और आधुनिकता, दोनों के खिंचाव में जीती है ।"[3] वह अन्य औरतों जैसा व्यवहार करना तथा गृहस्थी चलाना नहीं चाहती । अपने इस बर्ताव के बारे में वह हरबंस से कहती हैं - "मैं इस रास्ते पर इतना बढ़ आयी हूँ कि अब मैं लौटकर उस तरह की गृहस्थिन नहीं बन सकती जैसी कि तुम मुझे देखना चाहते हो । मैं तुम्हारे लिए सबकुछ करना चाहती हूँ, मगर उस रास्ते से हटकर नहीं ।"[4] इससे स्पष्ट होता है कि हरबंस नीलिमा को एक गृहस्थिन के रूप में देखना चाहता है परंतु यह नीलिमा को पसंद नहीं है । इस प्रकार उन दोनों के विचारों में, महत्वकांक्षाओं में फर्क दिखाई देता है । इसी कारण दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव पैदा हुआ है । डा. हेमेंद्रकुमार पानेरी लिखते है - "नीलिमा और हरबंस को आणविक परिवार भी बन्धन प्रतीत होने लगा है । इसका मूल कारण पति-पत्नी के दृष्टिकोण का अन्तर ।"[5]

हरबंस और नीलिमा दोनों पति-पत्नी होते हुए भी हर वक्त एक-दूसरे से अलग-अलग रहने की बात सोचते हैं और मौन रहते हैं । नीलिमा हरबंस से जो कुछ चाहती है वह हरबंस नहीं चाहता और हरबंस जो कुछ चाहता है वह नीलिमा नहीं चाहती । नीलिमा हरबंस के साथ उदास और गंभीर जीवन जीना नहीं चाहती । वह अकेली रहने के लिए तरस रही है । दोनों में अहं ज्यादा है । इसी कारण उनके दांपत्य जीवन का सुख गायब हो चुका है । जब भी नीलिमा कुछ पाने की कोशिश करती है तब हरबंस के अहं को ठेंस पहुँचती है । तभी दोनों में झगड़ा शुरू होता है । तब गुस्से में आकर नीलिमा कहती है - ''तुम्हारे लिए मैं सिर्फ औरत का शरीर हूँ, तुम्हारी वासना-पूर्ति का साधन, और तुम यह बरदाश्त नहीं कर सकते कि मैं इससे ज्यादा कुछ बन सकूँ । तुम खुद एक असफल आदमी हो, इसलिए तुम मुझे भी अपनी तरह असफल बनाकर रखना चाहते हो।''[6] इसी तरह उनके बीच के तनाव का कारण उन दोनों का अहं था । जब भी कभी हरबंस के अहं को ठेंस पहुँचती थी तब उसे इस जिंदगी से मुक्ति पाना अच्छा लगता था । इस प्रकार की जिंदगी से वह ऊब गया है । वह मधुसूदन से कहता है की मेरा कोई घरबार नहीं हैं । कोई सगा संबंधी नहीं हैं । और मैं बिल्कुल अकेला हूँ । मुझे लगता हैं मेरे साथ अन्दर ही अन्दर कोई दुर्घटना हो रही हैं । वह इस जिंदगी से उब चुका है । डा. सुमित्रा त्यागी का कथन सही है कि - ''हरबंस का पारिवारिक जीवन वैषम्य पूर्ण रहता है ।''[7] अब वह विदेश जाने की बात सोचता है और विदेश चला जाता है ।

हरबंस विदेश चला तो जाता है । परंतु वहाँ नीलिमा के अभाव में अकेलापन महसूस करता है । तब नीलिमा के प्रति उसका प्यार उमड़कर आता है । वह नीलिमा के अभाव में जी नहीं सकता । अपने अकेलेपन को बताते हुए वह नीलिमा को पत्र में लिखता है - ''मेरे अन्दर कहीं एक खालीपन है जो धीरे-धीरे इतना बढ़ता जा रहा है कि मेरे व्यक्तित्व के सब कोमल रेशे झड़ते जा रहे हैं ।''[8] अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह नीलिमा को अपने पास बुलाता है । जब नीलिमा उसके पास चली जाती है तब दोनों में फिर से झगड़े शुरू होते हैं । वहाँ दोनों भी एक-दूसरे को अपमानित करने का प्रयत्न करते दिखाई देते हैं । यहाँ हरबंस एक ओर सहजीवन की आशा करता हुआ दिखाई देता हैं तो दूसरी ओर उसके जीवन में व्याप्त रिक्तता दिखाई देती है । दोनों का दांपत्य जीवन नरक बनता है । दोनों पति-पत्नी तो हैं फिर भी एक दूसरे के साथ दुश्मनों के समान पेश आते हैं । नीलिमा के शब्दों में -''हम पति-पत्नी न होकर एक-दूसरे के दुश्मन हों और साथ रहकर एक-दूसरे से किसी बात का बदला ले रहें हों ।''[9] इसी कारण उनके दांपत्य जीवन में दिन-ब-दिन दरारें पड़ती जा रही हैं और दोनों एक-दूसरें से छुटकारा पाने के लिए तरस रहें हैं ।

नीलिमा जब ट्रुप के साथ जाने का निश्चय करती है तब दोनों में फिर झगड़ा शुरू होता हैं । नीलिमा तो जाना चाहती है परंतु हरबंस उसका विरोध करता है । तब नीलिमा कहती है - ''तुम्हें लगता है कि मैं यहाँ रहकर दूसरों के बच्चों के मुँह और नाक तौलिये से पोंछती रहूँ । मैं इस जिंदगी से बेजार आ चुकी हूँ । मैं एक दिन भी अब यह काम नहीं करूंगी । मैंने उमादत्त से कह दिया है कि मैं उसके साथ चलूँगी, और अब मैं अपनी बात वापस नहीं ले सकती ।'' [10] इससे स्पष्ट होता है कि नीलिमा भी हरबंस से दूर भागना चाहती है । क्योंकि उसकी मान्यता यह हैं कि उसके साथ जीवन बिताने से उसे नाम, शोहरत, इज्जत कुछ भी नहीं मिलेगी । इसलिए दोनों भी एक-दूसरे से दूर भागना चाहते हैं परंतु एक-दूसरे के बिना नहीं रह पाते । नीलिमा अपना नाम नृत्य के क्षेत्र में कमाना चाहती है और हरबंस पर बोझ बनके नहीं तो अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है । दोनों भी एक-दूसरें से दूर भागना चाहते हैं फिर भी अलग नहीं होते । दोनों भी मौन रहते हैं ।

हरबंस और नीलिमा दोनों भी एक-दूसरे से कुछ न कुछ चाह रखते हैं । हरबंस चाहता है कि 'नीलिमा हर वक्त अपने इर्द गिर्द चक्कर काटती रहे और उसकी मुस्कराहटे और खुलापन अपने संगत हो ।' हरबंस नीलिमा को गृहस्थिन के रूप में देखना चाहता था । किंतु नीलिमा को यह पसंद नहीं था । वह इस रास्ते पर चलना अपना अपमान समझती है । इससे नीलिमा की महत्त्वकांक्षा की झलक सामने आती है । हरबंस कला का प्रदर्शन नहीं करना चाहता बल्कि कला को जीवन से जोडकर आनंद प्राप्त करना पसंद करता है । जब नीलिमा दिल्ली के कला निकेतन में कला प्रदर्शन के लिए तैयार होती है तब हरबंस उसका विरोध करता है । परंतु वह अपना निर्णय नहीं बदलती । तब दोनों में फिर झगड़े की नौबत आती है । नीलिमा महत्त्वकांक्षी नारी होने के कारण शो का आयोजन करना चाहती है । आखिर शो रखा जाता हैं । जब शो सफल नहीं होता तब वह हरबंस से कहती है कि शो खराब करने की जिम्मेदारी तुम्हारी ही है । इसी कारण दोनों में आपसी तनाव बढ़ता है । नीलिमा का यह व्यक्तित्व देख रामदरश मिश्र लिखते है - ''नीलिमा शौकिन नारी है । वह कभी चित्र द्वारा, कभी नृत्य कला द्वारा समाज में एक विशिष्ठता प्राप्त करना चाहती है ।''[11] इससे स्पष्ट है कि नीलिमा स्वतंत्र प्रवृत्तिवाली एक फैशनेबल और शौकिन नारी है । हरबंस और नीलिमा, दोनों के विचार में भी भिन्नता है । दोनों के विचार एक-दूसरे को चुभते हैं । नीलिमा कला के द्वारा अपना विकास करें और दुनिया में एक सफल कलाकार बनें यह पति का सुझाव गलत मानती है और इसी कारण उसे सफलता के स्थानपर असफलता मिलती है । नीलिमा पति के बंधनों में रहना पसंद नहीं करती । वह कभी-कभी उसके सामने सिगार पीती है तो कभी-कभी शराब का सेवन भी करती है । अब

वह इतगी आगे बढ़ चुकी है कि पति का विरोध होते हुए भी वह विदेश चली जाती है । वहाँ ऊबानू के साथ रहती है । हरबंस के न चाहते हुए भी वह 'शो' का आयोजन करती है । अपने पति की आज्ञा का पालन करना वह अपना अपमान समझती है । वह अपने पति से भी ज्यादा अपना नाम कमाने की चाह रखती है । परंतु वह इसमें सफल नहीं होती ।

नीलिमा जब विदेश चली जाती है तब हरबंस को बहुत गुस्सा आता है । जब वह ऊबानू के साथ रहती है तब हरबंस को उसके अन्दर का पुरूष धिक्कारने लगता है । जब नीलिमा वापस आती है तब वह उसें संदेह भरी निगाहों से देखता है । दोनों में फिर तनाव बढ़ता है । परंतु नीलिमा अपनी पवित्रता को बचाये रखती है । फिर भी दोनों एक-दूसरें को संदेह भरी दृष्टि से देखते हैं । नीलिमा हरबंस से संबंध विच्छेद करना चाहती है । वह मधुसूदन को बतलाती है -"अगर वह कानूनी तौर पर संबंध विच्छेद करना चाहे, तो उसके खिलाफ मेरी तरफ से कोई रूकावट नहीं होगी ।" [12] परंतु वह ऐसा नहीं कर पाती । परंतु अपने पति के प्रति थोड़ा प्यार जागृत होते ही वह उसके पास विदेश से वापस आ जाती है ।

हरबंस और नीलिमा दोनों के दांपत्य जीवन में यौन संबंधों के कारण भी तनाव पैदा होता है । दोनों का प्रेम विवाह हो चुका है । हरबंस ने नीलिमा से जो कुछ चाहा है वह उसे नहीं मिला । वह बताता है कि - "मैं इसी नतीजे पर पहूँचा हूँ कि न वह मुझे कुछ दे सकती है और न मैं उसे कुछ दे सकता हूँ । इसलिए उसने अलग रहने का निश्चय कर लिया है, यह अच्छा ही है, नहीं तो वही चख-चख जिंदगी-भर बनी रहती । वह दस साल पहले जो कुछ मुझे नहीं दे सकती थी, वह आज भी नहीं दे सकती और दस साल और गुजर जाते, तो भी न दे पाती।" [13] इससे स्पष्ट होता है कि उसे जिस सुख शांति की आशा थी वह उसे नहीं दे पायी । इसी कारण दोनों एक दूसरे से दूर भागने की कोशिश करते हैं । नीलिमा भी हरबंस के व्यक्तित्व पर प्रसन्न नहीं है । वह कहती है - "विवाहित जीवन में दो व्यक्तियों का शारीरिक संबंध ही सब-कुछ नहीं होता, और मैं जानती हूँ कि मैं उसके लिए एक शारीरिक साधन से ज्यादा कुछ नहीं हूँ ।" [14] इस तरह इन दोनों का संबंध यौन और प्रेम संबंधों पर नहीं टिका बल्कि घुटन और खालीपन की दिवारों पर टिका है जो कभी भी टूट सकता है । दोनों भी एक-दूसरे से दूर भागना चाहते हैं । दोनों में किसी भी प्रकार का समझौता नहीं होता । दोनों अपने निश्चय पर तटस्थ रहते हैं । इसी कारण नीलिमा अब इतनी तंग आग गयी है कि वह "अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट होकर पति हरबंस के एखाधिकार

से मुक्ति पाना चाहती है ।"[15] नीलिमा का यह स्वभाव तथा व्यक्तित्व देख डॉ. स्वर्णलता लिखती है - "नीलिमा जिस प्रकार खा-पीकर तथा घूम कर संतुष्ट नही, घरेलू जिंदगी जीना उसका अभीसिप्त नहीं पति के लिए एक चीज बनकर रहना उसे असह्य हैं ।" [16] इसलिए वह हरबंस से दूर भागना चाहती है ।

दोनों को आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है । इसी कारण भी उनके दांपत्य जीवन में तनाव पैदा हो चुका है । पहले हरबंस अपना सारा रूपया नीलिमा के घरवालों पर खर्च करता था । परंतु जब वह विदेश चला जाता है तो आर्थिक तंगी के कारण वहाँ की गंदी बस्ती में दिन गुजारता है । जब नीलिमा वहाँ पहुँचती है तो वह भी आर्थिक समस्या का सामना करती दिखाई देती है । आर्थिक समस्या का हल करने के लिए वह विदेश में नौकरी करने लगी है । फिर भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं होता । इसी कारण दोनों में फिर से तनाव पैदा होता है । किसी-न-किसी बान को लेकर झगड़ा शुरू होता है । झगड़ा शुरू होते ही नीलिमा वापस चली जाने की बात कहती है - "देखो, मैं कहती हूँ मैं यहाँ से वापस जा रहीं हूँ, मुझसे इस तरह की जिंदगी नही जी जाती । क्या यही जिंदगी जीने के लिए तुमने मुझे यहाँ बुलाया था ?" [17] इससे ज्ञात होता है कि उन दोनों का दांपत्य जीवन कई कारणों से दु:खी है ।

हरबंस तो नीलिमा को संदेह पूर्ण दृष्टि से देखता है इसी कारण उसे लगता है कि नीलिमा उसकी उन्नति में बाधा डाल रहीं है । नीलिमा को लगता हे कि हरबंस उसकी उसकी उन्नति में बाधा डाल रहा है । वे दोनों भी जिंदगी में ऊँचा स्थान पाने के लिए तड़प रहे हैं । परंतु दोनों में हर वक्त तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है । इसीकारण उन्हें किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती । उन्हें हर जगह पराजित होना पड़ रहा है । अंत में वे अपना पति-पत्नी संबंध विच्छेद करने पर तुले हैं । फिर भी अलग नहीं हो पाते । दोनों में अहं ज्यादा है । नीलिमा कहती है कि हरबंस मेरे सिवा अकेला नहीं रह सकता । वह यौन संबंधों के बारे में कहती है कि - "तुम्हें मेरे अंदर वह स्त्री नहीं मिली जिससे तुम मन से प्यार कर सकों । इसलिए तुम्हारा मन बहुत भटकता हैं ।" [18] इससे यह ज्ञात होता है कि यौन संबंधों से तृप्त न होने के कारण भी दोनों में तनाव पैदा हुआ है । हरबंस उदास है । उसे नीलिमा से जो प्यार चाहिए था वह नहीं मिल रहा था । इसी कारण वह उसे विवाह पूर्व की सावित्री के रूप में देखने के लिए तरस रहा है । इसलिए कभी-कभी वह उसे सवि नाम से पुकारता है । इससे मालूम होता है कि हरबंस को एक अच्छी गृहस्थी चलाने वाली आज्ञाकारीं पत्नी की जरूरत है । सब चीजें नीलिमा में नहीं हैं । इन दोनों के प्रेम

विवाह के बारे में सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि उनका यह प्रेम विवाह सिर्फ एक मूक समझौता ही है । जो सिर्फ वासनापूर्ति के लिए ही किया गया था । हरबंस और नीलिमा के इस दांपत्य जीवन का चित्रण करते हुए उषा मंत्री लिखती हैं - "हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन पारस्परिक स्नेह और घृणा का एक विचित्र मिश्रण है ।" [19]

इस प्रकार इनका दांपत्य जीवन देखने के बाद यह पता चलता है कि दोनों का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:ख से भरा है । किसी न किसी कारण दोनों में झगड़े की स्थिति पैदा होती है । दोनों भी एक-दूसरे से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहें है । एक-दूसरें से छुटकारा पाने का मौका देख रहे हैं । इन दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव पैदा होने के कारण अनेक हैं । जैसे नीलिमा का खुलापन और खुलेआम जीना, फैशनेबल होना, अपना नाम कमानें के लिए पति का कहना न मानना, दोनों का एक-दूसरे को संदेह पूर्ण निगाहोंसे देखना आदि । श्रीकांत वर्मा के अनुसार -"दिल्ली के सांस्कृतिक जीवन को दयनीय ओर हास्यास्पद ढंग से अपने इर्द-गिर्द समेटने का प्रयत्न करने वाले नीलिमा और हरबंस एक इसी प्रकार के अभिशक्त दंपति है । एक दूसरे को अपनी असफलता और अप्रतिष्ठा के लिए उत्तरदायी ठहराते हुए, वे एक दूसरे के कठघरें में खड़े मुजरिम है ।" [20] संक्षेप में राकेश जी ने इस उपन्यास में नीलिमा और हरबंस के रूप में पति-पत्नी के अंतरिक संघर्ष एवं द्वंद्व की कहानी बताई है ।

3.1.2 शुक्ला और सुरजीत का दांपत्य जीवन -

इस उपन्यास का दूसरा दांपत्य हे सुरजीत और शुक्ला । शुक्ला नीलिमा की सगी बहन है । परंतु दन दोनों के स्वभाव में अन्तर हैं । शुक्ला सुंदर नारी है जिसका विवाह हरबंस का विरोध होते हुए भी सुरजीत से हुआ है । सुरजीत अनैतिक जीवन जीनेवाला एक पात्र है जो शुक्ला से शादी करने के पूर्व दो-दो विवाह कर चुका है और उसने पहली पत्नियों को छोड़ दिया है ।

शुक्ला एक आकर्षक और समर्पित युवती है जो सुरजीत जैसे खलनायक पति के साथ भी सफल गृहस्थीन के रूप में जीवन जीती है । शुक्ला के आकर्षक व्यक्तित्व की ओर हरबंस, जीवन भार्गव आदि आकर्षित होते हैं । शुक्ला भी हरबंस को अधिक मानती है । शुक्ला का विवाह सुरजीत जैसे खलपात्र के साथ हुआ है फिर भी वह सुखी है । उन दोनों के दांपत्य जीवन में किसी भी प्रकार का तनाव दिखाई नहीं देता ।

3.1.3 मिस्टर और मिसेस गुलाटी का दांपत्य जीवन -

ये दोनों भी अधेड़ उम्र दम्पती है । दोनों भी कला के बहुत शौकिन हैं । इनका दांपत्य जीवन भी सुखमय दिखाई देता है ।

3.1.4 पोलिटिकल सेक्रेटरी और उसकी पत्नी का दांपत्य जीवन -

इन दोनों का दांपत्य जीवन सुखमय दिखाई देता है । दोनों भी पात्र आधुनिक जीवन जीते है ।

इस प्रकार राकेश जी के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में हरबंस नीलिमा के दांपत्य जीवन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है । किंतु उनके साथ-साथ शुक्ला और सुरजीत, मिस्टर और मिसेस गुलाटी, पोलिटिकल सेक्रेटरी और उनकी पत्नी आदि के दांपत्य जीवन का नाममात्र उल्लेख हुआ है ।

राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि मुख्य पात्रों का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा तनावपूर्ण, कुंठा से युक्त और ज्यादातर दुःखद है ।

3.2 "न आने वाला कल" में दांपत्य जीवन -

3.2.1 मनोज ओर शोभा का दांपत्य जीवन -

'न आने वाला कल' यह मोहन राकेश जी का दूसरा उपन्यास है । इस उपन्यास की पहली दंपत्ति है मनोज और शोभा । मनोज इस उपन्यास का नायक है । वह सत्तर साल पुराने फादर बर्टन स्कूल में हिंदी का अध्यापक है । वह अपने स्वाभिमान को ठेंस पहुँचने नहीं देता । जब भी कभी अपने स्वाभिमान को ठेंस पहुँचती तब वह अपने आपको वहाँ से मुक्त करता था । शोभा भी एक पढ़ी लिखी औरत थी । इस उपन्यास के ये दोनों पात्र पढ़े-लिखे होते हुए भी उन दोनों का दांपत्य जीवन सफल नहीं दिखाई देता ।

मनोज और शोभा का प्रेम विवाह हो चुका है । यह विवाह मनोज का पहला और शोभा का दूसरा विवाह है । शोभा मनोज से पहले देव के साथ सात साल रहीं थी फिर भी मनोज के घर आकर एक नई जिंदगी की शुरूआत करना चाहती थी । यह बताते हुए मनोज कहता है -"उसने मेरे घर आकर एक नई शुरूआत की

कोशिश की थी, पर वह शुरूआत सिर्फ उसके अपने लिए थी । उस शुरूआत में मुझे उसके लिए वहीं होना चाहिए जो कि वह दूसरा था जिसकी वह सात साल आदी रही थी ।''[21]

मनोज स्कूल में नौकरी तो करता है परंतु स्कूल के दमघोंटू वातावरण से वह बहुत तंग आ चुका है । साथ ही वह घुटन का अनुभव करता है । इस घुटन को मिटाने के लिए पानी पीता है । फिर भी वह घुटन नही मिटती । इस स्थिति का चित्रण करते हुए मनोज कहता है - ''अंदर जैसे रेगिस्तान भर गया था जो सारा पानी सोखकर फिर वैसा का वैसा हो जाता था ।''[22] जैसे कि एक नई बिमारी ही लग गई थी । इस प्रकार वह स्कूल के वातावरण से ऊब गया है ।

मनोज और शोभा का यह प्रेमविवाह होते हुए भी दोनों में प्रेम, निष्ठा, एकरूपता तथा समर्पण नहीं दिखाई देता । दोनों के विचारों में भिन्नता दिखाई देती है । इसी कारण दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव पैदा हो चुका है । इसी तनाव के कारण वे दोनों एक-दूसरे से छुटकारा पाने का प्रयत्न करते है । मनोज भी अपने दांपत्य जीवन से ऊब गया है । वह अब छुटकारा पाने के लिए तरस रहा है । छुटकारा पाने की उसकी इच्छा इस कथन से प्रकट होती है -''कुछ था जिससे मैं छुटकारा चाहता था । उस कुछ का दबाव शोभा के आने से पहले भी था, शोभा के साथ रहते भी था, अब भी था ।''[23] इससे स्पष्ट होता है कि वह शोभा ओर नौकरी इन दोनों से छुटकारा पाने के लिए तरस रहा हैं । उन दोनों के विचार एवं महत्वकांक्षाएँ अलग-अलग हैं । अलग-अलग विचार होते हुए भी दोनों समझौता करके जीना स्वीकार नहीं करते । इससे ज्ञात होता है कि उन दोनों के विचार तथा रूचियाँ अलग-अलग हैं । इसलिए दोनों भी एक-दूसरे सें छुटकारा चाहते हैं । परंतु मनोज सोचता हैं कि जिस-चीज से अकेला होते हुए भी मैं छुटकारा नहीं पा सका उससे शोभा के आने के बाद कैसे छुटकारा पा सकता हूँ ? इससे ज्ञात होता है कि दोनों छुटकारा पाने के लिए अंदर ही अंदर डरते है । दोनों भी आने अहं के कारण अपनी-अपनी शर्तो पर जीना पसंद करते हैं । इसी कारण उन दोनों का दांपत्य जीवन दु:खद बन गया है ।

शोभा का यह मनोज के साथ दूसरा विवाह है । दोनों भी अपने अकेलेपन से मुक्ति पाने के लिए ही विवाह करते हैं । शोभा के दिल में अब भी पहले पति के प्रति सहवेदना तथा प्यार है । उसके हर काम में हर वक्त पहला पति देव उपस्थित रहता है । उसके रिक्त स्थान को भरने के लिए ही वह मनोज से शादी करती है । परंतु मनोज उसे प्यार नहीं दे पाता । इसी कारण दोनों में फिर तनाव बढ़ने लगता है । मनोज भी अने अकेलेपन से

मुक्ति पाने के लिए ही शोभा से ब्याह करता है । परंतु विवाह सिर्फ दो दिलों के बीच वासनापूर्ति का साधन नहीं बल्कि अपने अकेलेपन को मिटाने का माध्यम भी है । वह एक ऐसा माध्यम है जहाँ दो दिलों का संगम होता है जहाँ अभाओं के होते हुए भी सुखों की तृप्ति मिलती हैं । इससे मालूम होता है कि अच्छी सुख शांति पाने के लिए दो दिलों का मिलन आवश्यक है । परंतु वह मिलन शोभा और मनोज के दिलों में असंभव है । इसी कारण दोनों पति-पत्नी में हमेशा संघर्ष निर्माण होता है । उन दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव का महत्त्वपूर्ण कारण है शोभा का पहला पति-पत्नी । जो भी कार्य वह करना चाहती है तब देव वहाँ उपस्थित रहता है । उसे हर वक्त अपने पहले पति की याद आती थी । परंतु अपने सारे व्यवहार से वह यह प्रकट करना चाहती थी कि वह उसकी पहली शादी है वह अपनी इस खोई हुई जिंदगी में जीती थी । इसी कारण उसकी आँखों में कई बार वह शहीदाना भाव नजर आता था । सुबह उठने से रात सोने तक वह बात-बात पर शहीद होती थी । शोभा के इस शहीद होते रहने की आदत के कारण मनोज मन ही मन दर्द का अनुभव करता था ।

मनोज को शोभा से शादी करने का अब पछतावा हो रहा है । अब उसे शादी से पहले और शादी के बाद भी अंदर ही अंदर डर महसूस हो रहा है । इसका एक कारण है कि उन दोनों का यह प्रेम विवाह है । मनोज पैंतीस साल की उम्र तक अकेला रहने के बाद अपने आपको काफी थका हुआ महसूस करता है । वह अपने खालीपन को भरने के लिए शोभा से शादी करता है । इस प्रकार जब थका हुआ आदमी शादी करता है तब उसमें जान कैसी डाली जा सकती है ? और वह अपने दांपत्य जीवन में कैसा सुखी हो सकेगा ? स्वाभाविक है कि मनोज भी अपनी पत्नी शोभा को सुख नहीं दे पाता । इसी का नतीजा यह होता है कि शोभा मनोज से छुटकारा पाने के लिए विवश हो जाती है और नया घर बसाने की बात सोचती है । परंतु इसमें वह असफल हो जाती है । वे दोनों अपनी अपनी शर्तों पर जिंदगी जीने के लिए विवश होकर जिंदगी जीते हैं । लेकिन दोनों को एक-दूसरे से कोई आशा नहीं थी, इसलिए दोनों में बिखराव की स्थिति बहुत कम आती थी ।

मनोज को अब शोभा के साथ शादी करने का पछतावा हो रहा है । शोभा के साथ विवाह कर वह अपने आपको दु:खी महसूस कर रहा है । मनोज को लगता है कि -"उसकी नजर में मैं अब भी एक अकेला आदमी था जिसका घर उसे संभालना पड़ रहा था जबकि मेरे लिए वह किसी दुसरे की पत्नी थी जिसके घर में मैं एक बेतुके मेहमान की तरह टिका था ।" [24] इससे बचने के लिए मनोज ज्यादा से ज्यादा वक्त घर से बाहर ही रहता है ।

परंतु जब भी कभी एकाध दिन उसे घर में रहना पड़ता तो शोभा घर से बाहर अपने पड़ोस में रहने वाली शारदा के पास चली जाती है । इस प्रकार बर्ताव से ज्ञात होता है कि दोनों में तनाव, बिखराव बढ़ता जा रहा है ।

शोभा स्वतंत्र प्रवृत्ति वाली नारी है । स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी होने कारण वह अपने स्वाभिमान एवं अहं को छोड़कर जीना नहीं चाहती । उनका व्यक्तित्व भी आक्रामक है । इसी कारण अपने पति द्वारा दिए गए सुझावोंपर चलना वह अपना अपमान समझती है । वह समझती है कि एक अच्छी और सफल जिंदगी जीने के लिए जो कुछ ज्ञान चाहिए वह सिर्फ मेरे सिवा किसी को नहीं है । वह स्वाभिमानी नारी होने के कारण अपने पति से किसी भी प्रकार की सलाह नहीं लेती । वह अपना रास्ता खुद ही तय करती है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा । वह पति मनोज को तुच्छ समझती है । इतना ही नहीं तो मनोज ने जो चीजें इकट्टा की थी उनसे शोभा को नफरत हैं । वह उन्हें फेंकना चाहती है । जब भी कभी उसे अपने पहले पति की याद आती थी तब वह दुविधावस्था में अपनी जिंदगी जीती थी । इससे छुटकारा पाने के लिए वह अपने पिता के पास खुरजा चली जाना चाहती है । कभी- कभी अपने पहले पति देव के घर जाकर रहने की बात भी वह करती है । एक बार मनोज की इजाजत लिए बिना स्कूल में जाकर उससे झगड़ा करती है । इतना ही नहीं तो अपने पहले पति के घर जाने की बात मनोज से कहने में वह किसी भी प्रकार का भय महसूस नहीं करती । शोभा का यह बर्ताव देख मनोज को शोभा के साथ शादी करने का पछतावा होता है । मनोज पहले से ही शादी के बारें में निरूत्साही था ओर अनायास ही विवाह में बंधा जाने से इस यातना से युक्त जीवन का वह शिकार बन जाता है ।

मनोज और शोभा के दांपत्य जीवन में यौन समस्या यह भी एक तनाव का महत्त्वपूर्ण कारण है । दोनों का विवाह तो हो चुका है परंतु दोनों भी शारीरिक संबंधों से संतुष्ट नहीं हैं । मनोज के पैतीस साल के बाद शोभा से शादी की है इसलिए शोभा से प्यार पाने के लिए वह व्याकुल है । परंतु शोभा अपनी शुरू की जिंदगी सात साल तक किसी दूसरे के साथ बीताने के कारण वह मनोज को प्यार देने में असमर्थ है । उन दोनों की जिंदगी इतनी तनावग्रस्त बन गई है कि रात में सोते समय शोभा बायी बिस्तर पर बायीं करवट और मनोज दायें बिस्तर पर दायी करवट करके सो जाते थे । अगर कभी गलत करवट में एक का हाथ दूसरे से छू जाता था तब दोनों भी 'स्वारी' कहकर अपनी-अपनी औपचारिकता निभाते थे । इससे मालूम हो जाता है कि दोनों भी अपनी अपनी राह पर चलना पसंद करते हैं । दोनों पति-पत्नी होते हुए तनाव ग्रस्त जिंदगी जीते हैं ।

मनोज को शोभा की कोई अदा पसंद नहीं है तो शोभा को मनोज की । जब शोभा मनोज की भलाई के लिए सिगार छुड़ाने की बात बताते हुए एक लेख पढ़ने देती हे - "यू कैन स्मोक योर सेल्फ टू डेथ ।"[25] किंतु मनोज उसके बिल्कुल उल्टा बर्ताव करता है । वह उसी दिन सबसे ज्यादा सिगार पीता है । इस प्रकार जब शोभा मनोज की भलाई चाहती है तब वह उसके बिल्कुल खिलाफ बर्ताव करता है । दोनों का दांपत्य जीवन इसी कारण भी दर्द से भरा हुआ दिखाई देता है । इससे मालूम होता है कि मनोज और शोभा अपना घर बसाने में असमर्थ हैं । शोभा मनोज को प्यार देने में और मनोज शोभा को सुख देने में असमर्थ हैं । इसी कारण दोनों पारिवारिक जीवन से तंग आकर एक-दूसरे से मुक्त होना चाहते हैं । दोनों के दांपत्य जीवन में पैदा हुआ यह तनाव उपन्यास के अंत तक बना रहा है । मनोज अपने दांपत्य जीवन में यौन संबंधों में तृप्त नहीं है इसी कारण वह अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए बानी और काशनी की ओर आकर्षित हो जाता है । इस प्रकार दोनों भी यौन संबंधों में अतृप्त दिखाई देते हैं । उन दोनों के विचार, रहन-सहन, बर्ताव आदि में भिन्नता दिखाई देती हैं । विचार-वैषम्य के कारण उन दोनों का तनाव अधिक बढ़ जाता है ।

इस प्रकार मनोज और शोभा का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दुःखमय अधिक दिखाई देता है ।

3.2.2चेरी और लारा का दांपत्य जीवन -

इस उपन्यास में एक और दांपत्य जीवन जी रहे हैं चेरी और लारा । दोनों भी पति-पत्नी मनोज के साथ साथ फादर बर्टन स्कूल में ही काम करते हैं । वे दोनों तो समाज कीं दृष्टि में सुखद दांपत्य जीवन जी रहे हैं लेकिन अंदर ही अंदर दोनों बहुत दुःखी हैं । दोनों के दुःख का कारण हैं मिसेस दारूवाला । समाज के डर से वे दोनों एक घर में रहकर पति-पत्नी जैसा व्यवहार तो करते हैं लेकिन अंदर ही अंदर वे एक-दूसरे से दूर भागना चाहते हैं ।

चेरी विवाहित होते हुए भी मिसेस दारूवाला से चुपके-चुपके प्यार करता है । कभी - कभी वह उससे मिलता भी है । चेरी का यह स्वभाव लारा को पसंद नहीं है । चेरी के इस स्वभाव पर लारा को गुस्सा तो आता है परंतु समाज के डर के कारण वह चुप रहती है । चेरी मिसेस दारूवाला से मिलने के लिए बेचैन रहता है । परंतु लारा के कारण मिसेस दारूवाला से मिलने में रूकावट आती है । इस रूकावट को वह हमेशा के लिए दूर करने के लिए पत्नी लारा को मायके भेजना चाहता है । परंतु पत्नी को लगता है कि -"यह मुझे यहाँ से भेजकर

मुझसे छुट्‌टी पाना चाहता हैं ।"[26] इसलिए वह मायके जाना नहीं चाहती । पत्नी लारा को यह डर लगता है कि अपना पति चेरी मिसेस दारूवाला का न हो जाए । इसी डर के कारण वह उसके इर्द - गिर्द ही घूमती रहती है । पत्नी लारा का अपने इर्द - गिर्द घूमना चेरी को पसंद नहीं है । वह उससे मुक्तता चाहता है लेकिन उसे मुक्तता नहीं मिलती । इसी कारण दोनों का दांपत्य जीवन कुंठा से युक्त बन गया हैं ।

मिसेस दारूवाला के कारण ही उन दोनों के जीवन में तनाव पैदा हुआ है । चेरी मिसेस दारूवाला से यौन संबंध स्थापित करना चाहता है । दूसरी ओर उसकी पत्नी लारा अपने पति को पूर्ण रूपसे पाना चाहती है । इस प्रकार दोनों का दांपत्य जीवन तनाव, कुंठा आदि से युक्त है । फिर भी दोनों बिखराव नहीं चाहते । दोनों के बीच सिर्फ कृत्रिम दांपत्य संबंध ही बने हुए नजर आते हैं । दोनों भी इसी कुंठा एवं तनाव से ग्रस्त दांपत्य जीवन को किसी तरह ढोने का प्रयास कर रहे हैं ।

लारा पति को दिल से चाहती है ओर पति चेरी लारा को न चाहकर मिसेस दारूवाला को चाहता है । वह उसे ही अपने पास रखना चाहता है । इससे मालूम हो जाता है कि मिसेस दारूवाला का व्यक्तित्व चेरी पर हावी हो गया है । इसी कारण चेरी भी अपनी पत्नी को न चाहकर मिसेस दारूवाला को चाहता हैं । अपने दांपत्य जीवन में मिसेस दारूवाला का आगमन लारा को पसंद नहीं है । वह अपने पति को अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है । उसे अपने प्रेम में बाँधने का प्रयास भी वह करती है । अपने पति के साथ मिसेस दारूवाला का यौन संबंध उसे अच्छा नहीं लगता । अपना पति अपने हाथ से न छूट जाय यह भय लारा को है । इसलिए हर वक्त वह उसे पाना चाहती है और उसके आस - पास ही घूमती रहती है । इस तरह दोनों पति-पत्नी तो हैं फिर भी सुखमय जीवन जीने के बदले दर्दपूर्ण, घुटनसे युक्त, दुःखमय दांपत्य जीवन जी रहे हैं ।

पति-पत्नी के दांपत्य जीवन में कोई भी बाह्य पुरूष या स्त्री का आना एक बहुत बड़ी समस्या हैं । क्योंकि किसी भी बाह्य पुरूष या स्त्री के आने के कारण पति-पत्नी का दांपत्य जीवन संघर्षमय बनता है । कभी - कभी यह दाम्पत्य जीवन इतना कमजोर हो जाता है कि पति-पत्नी एक - दूसरे से हमेशा - हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं । अगर दांपत्य जीवन पर कोई संकट आ जाता है और पति-पत्नी में से किसी एक का विवाह बाह्य संबंध स्थापित है तो ऐसे समय उन दोनों की ओर समाज बुरी नजर से देखता है । दांपत्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए पति-पत्नी के बीच एक-दूसरे के प्रति समर्पण आवश्यक है । दोनों के आचार - विचार, रहन-सहन और

एक-दूसरे के प्रति सच्ची लगन का होना आवश्यक है । अगर उपर्युक्त बातें दोनों में नहीं हैं तो वह दांपत्य जीवन सुखमय की अपेक्षा दु:खमय ही अधिक होगा । चेरी और लारा का दांपत्य जीवन भी सुख की अपेक्षा दु:खमय अधिक है ।

3.2.3मि. पार्कर और मिसेस पार्कर का दांपत्य जीवन -

यह इस उपन्यास की तीसरी दंपत्ति है । दोनों स्कूल में अध्यापन का काम करते हैं । दोनों सत्तर साल पुराने फादर बर्टन स्कूल में काम करते हैं । यहाँ का जो माहौल था वह अभी भी परंपरागत पद्धति नुसार था । मिसेस पार्कर को यहाँ का वातावरण पसंद नहीं है । वह स्कूल के दमघोंटू वातावरण तथा जिंदगी से ऊब गई हैं । साथ ही साथ उसे भारतीय संस्कृति पर शक हुआ है । इसलिए वह स्कूल से छुटकारा पाकर विदेश जाना चाहती है । वह अपने आपको विदेशी ही समझती है । कभी - कभी मि. पार्कर के सामने वह विदेश जाने का हट भी करती है । परंतु मि. पार्कर इसके लिए राजी नहीं है । मि. पार्कर तो स्कूल के दमघोंटू वातावरण से चिपके रहना चाहते हैं । अपने पति को विदेश जाने राजी करने के लिए वह कहती है कि -'यहाँ हम लोगों का अब क्या भविष्य हैं ?' हमें तो विदेश जाना ही चाहिए । परंतु मि. पार्कर इस प्रस्ताव पर राजी नहीं है । इसी कारण दोनों का दांपत्य जीवन तनाव ग्रस्त बन गया है ।

मिसेस पार्कर अहं प्रवृत्तिवाली नारी है । उसे इस बात का अहं है कि वह अपने आपको विदेशी माहौल के लिए उपयुक्त मानती है । इसलिए वह विदेश जाने की बात कहती है । इससे ज्ञात होता है कि मिसेस पार्कर एक ऐसी अध्यापिका हैं, जो भारत में रहकर भी विलायत में है जैसा व्यवहार करती है । अपनी बेटी पर भी भारतीय संस्कृति का प्रभाव न पड़े इसलिए वह उसे लंदन भेजती है । मिसेस पार्कर महत्वकांक्षी नारी हैं । किसी भी हालत में वह अपनी महत्वकांक्षा पूरी करना चाहती है । परंतु उसकी महत्वकांक्षा पूरी करने में मि. पार्कर असमर्थ है । इसी कारण उन दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा है । मिसेस पार्कर स्कूल के वातावरण से मुक्ति चाहती है । साथ ही साथ विदेश भी जाना चाहती है । यह उनके दांपत्य जीवन पर आया संकट ही है । मिसेस पार्कर की कामना पूरी करने में मि. पार्कर समर्थ नहीं है इसी कारण वह दांपत्य जीवन से तंग आ गयी है । दोनों भी एक-दूसरे से छुटकारा चाहते है फिर भी डरते है और एक-दूसरे के साथ घुटन युक्त जिंदगी जीते है ।

दांपत्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए पति-पत्नी दोनों के आचार-विचार, स्वभाव, मनसूबें एक होने चाहिए । इन दोनों पति-पत्नी के स्वभाव, विचार, मनसूबे अलग-अलग हैं । इसी का नतीजा उनका दांपत्य जीवन सुखमय नहीं तो दु:खमय बन गया है । मिसेस पार्कर को अपने इच्छा के विरूद्ध ही स्कूल के साथ और पति के साथ रहना पड़ रहा है । फिर भी वह उसके साथ रहती है । मिसेस पार्कर को अब न स्कूल के प्रति आसी है न पति के प्रति । फिर भी दोनों एक-दूसरे से अलग होने से डरते है और कुंठा से युक्त जीवन जीते हैं । मि. पार्कर और मिसेस पार्कर का दांपत्य जीवन भी खोखला बन गया है ।

3.2.4टोनी व्हिसलर और जेन व्हिसलर का दांपत्य जीवन -

यह उपन्यास का चौथा दांपत्य है । दोनों भी फादर बर्टन स्कूल में अध्यापन का काम करते हैं । टोनी व्हिसलर हेड मास्टर है । टोनी व्हिसलर हमेशा हेडमास्टर का मुखौटा पहनकर अपना रोब बनाये रखने के लिए राजनीति पूर्ण जीवन जीता है । वह परिश्रमी आदमी है । वह परिश्रमी होने के कारण हर समय काम में व्यस्त रहता है । वह अपने नियमों में जकड़ा होने के कारण अपने ढंग से काम करता है । परंतु उसकी पत्नी जेन व्हिसलर का स्वभाव टोनी के स्वभाव के बिल्कुल विरूद्ध है । टोनी का परिचय देते हुए ओम प्रभाकर लिखते हैं -''टोनी दरअसल दोहरे व्यक्तित्व का व्यक्ति है । स्कूल में जहाँ वह एक बेहद चुस्त-दुरूस्त और सख्त प्रशासक के रूप में दिखाई देता है वहीं घर पर उसे एक निहायत सहज और सौजन्यपूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है ।''[27]

टोनी हर समय कसा हुआ रहता था । वह जितना कसा कसा रहता था जेन उतनी ही खुली, खुशमिजाज और मिलनसार नारी थी । टोनी व्हिसलर जितना कठोर स्वभाव का आदमी है उसकी तुलना में उसकी पत्नी का स्वभाव भिन्न दिखाई देता है । जेन अपने पति के सामने अपने आप को गंभीर बनाए रखती है तो उसकी अनुपस्थिति में खूब खुलकर हँसती है । टोनी व्हिसलर जेन से छुटकारा पाना चाहता है । इसलिए वह हर वक्त काम में मग्न रहता है । जेन अपने पति टोनी के काम के बारें में कहती है -''वह तो स्टेनलेस स्टील का पुर्जा है जो बीना घिसे-चौबीसों घण्टे काम कर सकता है । उसे दु:ख है तो यही कि दुनिया में और लोग भी उसकी तरह स्टेनलेस स्टील के पुर्जे क्यों नहीं हैं ।''[28]

अपना मन बहलाने क लिए वह फोटोग्राफी भी करता है । उसके इस शौक के बारे में जेन कहती है -''मैं समझती हूँ, उसे सिवाय फोटोग्राफी के कोई काम नहीं करना चाहिए । पर उसके स्वभाव को देखते हुए

लगता है कि उसे हेडमास्टर या फोटोग्राफर न होकर किसी स्टील प्लांट में हेड फोरमैन होना चाहिए ।" [29] टोनी अपने आपको हर वक्त काम में व्यस्त रखने का प्रयत्न करता है तो उसकी पत्नी उसे खुलकर हँसते देखना चाहती है । परंतु वह कभी भी खुलकर नहीं हँसता । इस तरह दोनों के स्वभाव, रूचि आदि में भिन्नता है । इसी कारण दोनों एक-दूसरे से छुटकारा पाना चाहते हैं । लेकिन वे समाज से डरते हैं । वे दोनों समाज में अपनी इज्जत बनाए रखना चाहते हैं । टोनी अपने मन की पीड़ा या कष्ट को हर वक्त कहीं - न - कहीं काम में व्यस्त रहकर भूलाने का प्रयास करता है ।

जेन भी अपने पति से छुटकारा पाना चाहती है । दोनों के जीवन में जब ज्यूरिच की जायदाद की बात उपस्थित होती हैं तो दोनों में तनाव अधिक बढ़ जाता हैं । उस जायदाद का क्या किया जाए इस बात पर दोनों में काफी मतभेद होते हैं । मिस्टर व्हिसलर उसे बेचना चाहता है परंतु जेन उसके विचारों के खिलाफ है । जेन ज्यूरिच में अपना निवास स्थान बनाना चाहती है ओर हमेशा के लिए टोनी से छुटकारा पाकर वहाँ अपना घर बसाना चाहती है । इससे मालूम होता है कि दोनों भी एक-दूसरे से छुटकारा पाने के लिए तरस रहें हैं । दोनों भी एक-दूसरे की उपस्थिति में अजनबी की तरह बर्ताव करते हैं । दोनों पति-पत्नी काम संबंधों में भी असंतुष्ट हैं ।

दोनों में एक-दूसरे से दूर भागने की कोशिश, दोनों के रहन-सहन में भिन्नता, वक्त काटनें के लिए टोनी का काम में व्यस्त रहना आदि कारणों से दोनों का दांपत्य जीवन तनावग्रस्त बन गया है । इन दोनों का दांपत्य जीवन भी सुख कि अपेक्षा दु:खमय अधिक बन गया है ।

3.2.5कोहली और शारदा का दांपत्य जीवन -

यह 'न आने वाला कल' उपन्यास की पाँचवी दंपत्ति है । दोनों मध्यवर्गीय परिवार के पात्र हैं । कोहली फादर बर्टन स्कूल में काम करता है । कोहली की शारदा के साथ दूसरी शादी हो चुकी है । यहाँ दोनों का अनमेल विवाह हो चुका है । कोहली ने अपनी पहली पत्नी का देहान्त हो जाने के बाद सैंतालिसवें साल में उन्नीस साल की शारदा से शादी की है । उन दोनों की उम्र में कमसे कम 24 साल का अंतर था । फिर भी दोनों का यह अनमेल विवाह सिर्फ शारदा के माता-पिता की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण ही हुआ था । शारदा ने अभी - अभी जवानी में प्रवेश किया था । इसी कारण वह कोहली से प्यार पाने के लिए तड़फ रही थी । परंतु कोहली बुढ़ापे की ओर मुड़ चुका था । इसी कारण वह शारदा को प्यार देने में असमर्थ था । इसी का नतीजा यह हुआ कि

कोहली शारदा पर शक करने लगता है । कभी - कभी दोनों में झगड़ा भी हो जाता है । दोनों पति-पत्नी कामसंबंधों में असंतुष्ट होने के कारण उनका दांपत्य जीवन दु:खमय बन गया है ।

कोहली शारदा पर हमेशा शक करता रहता है । इतना ही नहीं तो अपना नौकर भूपसिंह पर भी शक करता है और उसे नौकरी से निकाल देता है । कभी - कभी वह शारदा को बहुत गालियाँ देता है । रात के समय आजू बाजू के सब लोग सो जाने के बाद उसकी बुरी तरह से पिटाई करता था । उसी समय शारदा अपने आपको बचाने के लिए गुसलखाने में बंद हो जाती थी । वह कोहली के इस तरह के बर्ताव से तंग आ गई है । वह कहती है - "मेरा इस आदमी के साथ गुजारा नहीं है । मेरे माँ - बाप ने पता नहीं क्या देखकर मुझे इसके साथ ब्याह दिया । यह भी कोई आदमी है जिसके साथ एक लड़की जिंदगी काट सके ! मेरी अभी उम्र ही क्या हैं ! जब शादी हुई तब मैं पुरे उन्नीस की भी नहीं थी । मेरे मां- बाप ने इतने दिन दौड़ धूप करके मेरे लिए ढूँढ़ा भी तो यह आदमी !" [30]

इससे ज्ञात होता है कि शारदा कोहली की संदेह युक्त दृष्टि तथा मारपीठ से तंग आ चुकी है । अब वह हमेशा के लिए कोहली से छुटकारा पाना चाहती है । उसकी सहनशीलता का अंत हो चुका है । उसने निश्चय किया है कि -"मुझे चाहे सारी उम्र कंवारी रहना पड़े, मैं इस आदमी के साथ ओर एक दिन भी नहीं रहूँगी !" [31] उसने अपना सारा सामान अपने साथ ले जाने का निर्णय ले लिया है । वह मनोज को यह भी कहती है कि - "मुझे तो फिर भी कोई न कोई मिल ही जाएगा, इसे कोई मेहरी चमारी भी नहीं मिलने की घर बसाने को । घर उसका बस सकता है जो और कुछ न हो, आदमी तो हो । यह तो आदमी ही नहीं है । इसका घर क्यों बसेगा ?" [32] शारदा अब कोहली के बर्ताव से ऊब गई है । वह किसी भी हालत में उससे मुक्ति पाकर नया घर बसाने का निश्चय कर बैठी है । वह उससे मुक्ति पाकर अपना जो नया सामान था उसे अपने साथ ले जाना चाहती है । कोहली पर अपना गुस्सा प्रकट करते हुए वह मनोज को बताती है कि -"एक औरत और सब कुछ सह सकती है जी, पर मार खाना कभी बरदाश्त नहीं कर सकती । आज कल कोई जमाना है मार खाने का ? हम आजकल की औरतें हैं, उस जमाने की नहीं जब मरद लोग चादर डालकर उन्हें पीट लिया करते थे ।" [33]

शारदा के विचारों में आधुनिकता दिखाई देती है । वह एक आधुनिक नारी के रूप में हमार सामने पेश आती है । वह पति के व्यवहार से तंग आ गई है । उसने अब किसी अन्य के साथ विवाह करने की बात

सोच ली है । वह कहती है कि -"उस जमाने में तो किसी औरत की दूसरी शादी हो नहीं सकती थी । पर आजकल तो औरत भी चाहे तो दूसरी शादी कर सकती है ।"[34] उपर्युक्त वाक्य से शारदा के आधुनिक विचार नजर आते हैं ।

कोहली और शारदा के बीच हर दिन किसी-न-किसी कारण झगड़ा होता था । कभी - कभी शारदा की पिटाई भी होती थी । यह पिटाई रात के समय होने के कारण दोनों भी अधीरात तक जागते थे । इसी कारण कोहली को क्लास में नींद आतशी थी । उनकी नींद को देख क्लास के लोग मजाक में कहते थे कि "क्या बात है कोहली ? नई शादी की है, इसका यह मतलब तो नहीं कि रात रात भर सोओ नहीं । अगर इतना ही प्यार है तो महीने, दो महीने की छुट्टी लेकर उसे कहीं बाहर ले जाओ ।" [25] इस प्रकार दोनों का दांपत्य जीवन दूसरों की नजर में सुखमय है परंतु वे दोनों भी एक-दूसरें से छुटकारा पाने के लिए तड़फ रहे है ।

शारदा कोहली के विद्रोहपूर्ण व्यवहार से तंग आ गई है । वह टूट चुकी हैं । अब वह कोहली से छुटकारा पाकर शांति से जिंदगी गुजारना पसंद करती हैं । शारदा और कोहली के इस अनमेल विवाह के कारण ही उनके दांपत्य जीवन में अनेक समस्याएँ उभर आयी हैं । इस प्रकार इन दोनों का दांपत्य जीवन भी दुःख से परिपूर्ण है ।

3.2.6 जिमी और रोज का दांपत्य जीवन -

रोज जिमी की पत्नी है । वह दिखने में बहुत सुंदर है । जिमी तथा उसकी पत्नी रोज साथ - साथ रहकर भी एक-दूसरे से अलग रहते हैं । रोज कम शब्दों में ही वार्तालाप करती है । वह भी स्कूल में काम करती है परंतु हेडमास्टर की गुलामी करना उसे अच्छा नहीं लगता । वह अपनी जिंदगी लंदन के वैस्टऐण्ड में गुजारना चाहती है । अपने पति के कहने पर अनचाहे ही नाटक में अभिनय करती है । रोज अभिनय को जीवन से जोड़ती है ।

रोज का अपना व्यक्तित्व है और मौका आने पर वह निर्भय होती है । वह हेडमास्टर व्हिसलर को प्रसन्न करने के लिए कोई अनिवार्यता नहीं मानती । परंतु उनका पति अनिवार्यता मानता हैं । इस प्रकार दोनों का स्वभाव एक-दूसरे के बिल्कुल विरूद्ध हैं । रोज को कभी - कभी शराब पीने की आदत है । परंतु वह शराब

पीने की आदत को अपने पति को जिम्मेदार ठहराती है । वह मिसेस ज्याफ्रे से यह सवाल भी पूछती है कि -"पार्टी में आने से पहले थोडी सी पी लेना बुरी बात है क्या ?" [36]

इस तरह इन दोनों के विचारों में स्थित भिन्नता और रोज का अपना अलग व्यक्तित्व आदि के कारण इन दोनों का दांपत्य जीवन भी सुखमय नहीं दिखाई देता ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि मोहन राकेश जी के "न आने वाला कल" उपन्यास में चित्रित सभी पात्रों का दांपत्य जीवन तनावग्रस्त हैं । सभी अपने-अपने ढंग से अपना जीवन जी रहे हैं । हर एक दंपत्ति के दांपत्य जीवन में उनका स्वभाव, व्यवहार, उम्र आदि में समानता की अपेक्षा वैषम्य ही है । इसी कारण उनका जीवन सुख की अपेक्षा दु:ख से भरा हुआ है । इस उपन्यास में चित्रित सभी दंपत्तियों का एकाकीपन तथा खालीपन देख चंद्रकांत बांदिवडेकर लिखते हैं -"इस आंतरिक भीषण खालीपन को भरने के लिए परस्पर ईर्षा, कटुता और नोचखसोट कर सुख प्राप्त करने की वृत्ति ही शेष बची है । हर व्यक्ति का यह खोखलापन यह मह महसूस करता हैं कि वह फालतू जिंदगी जी रहा है और हर दूसरा व्यक्ति उसके लिए नरक है ।" [37] इसका चित्रण राकेशजीने बड़ी सूक्ष्मता से किया है ।

3.3 'अन्तराल' में दांपत्य जीवन -

3.1 देव और श्यामा का दांपत्य जीवन -

'अन्तराल' उपन्यास में प्रधान रूप से चित्रित जीवन देव और श्यामा का हैं । देव की पत्नी श्यामा इस उपन्यास की नायिका है । श्यामा का बचपन मध्यप्रदेश के एक जंगली इलाके में बीता था जो लगभग आदिवासियों के बीच में था । अपने जीवन का इतिवृत्त बताते हुए वह कहती है - "दस साल की उम्र तक वह काफी अकेली रहती थी । तीन साल की थी जब माँ गुजर गई थी, उसके बाद घर पर कोई देखभाल करनेवाला नहीं था । सगा बहन-भाई कोई नहीं था ।" [38] बचपन में ही उनसे माँ बाप का प्यार छिन गया था । देव और श्यामा का विवाह एक संयोग मात्र था । देव श्यामा के साथ शादी करने के लिए राजी नहीं था फिर भी अपनी माँ की इच्छानुसार श्यामा से शादी करता है । यह शादी श्यामा को मान्य थी परंतु देव इसके लिए राजी नहीं, यह मालूम होते हुए भी वह राजी होकर देव के साथ शादी करती है । श्यामा पति देव से उदारता और कोमलता पूर्ण व्यवहार

की अपेक्षा रखती है । परंतु यह शादी देव की इच्छा के विरूद्ध होने के कारण वह काफी टूट चुका था । वह कभी खुश नहीं दिखाई देता था । वह कभी श्यामा को डाँटता नहीं, कभी कोई शिकायत करता नहीं । पति देव के बारें में श्यामा कहती है -"देव इतना चुप रहता था कि कभी मुझे किसी के साथ देख भी लेता कुछ करते, तो शायद दुसरी रतफ मुँह कर लेता ।"[39] जब कभी देव अपनी माँ बीजी और बहन सीमा को डांटता था तो श्यामा उसे अपने आपको डाँटने को कहती । तब देव उसे कहता -"वे लोग अच्छी तरह जानती हैं मुझे क्या पसन्द है, क्या नहीं । उन्हें इसका ध्यान रखना ही चाहिए । तुम्हारी बात दूसरी है । तुम अभी नई आई हो ... ।"[40] परंतु यह नयापन दो चार महीने गुजरने के बाद भी ज्यों-का-त्यों बना रहा था । शादी के बाद वे दोनों कई घंटे एक कमरें में साथ-साथ गुजारते हैं फिर भी देव कमरें में आते ही वह कमरा श्यामा के लिए नया और अपरिचित हो जाता था ।

श्यामा और देव दोनों, पति - पत्नी तो हैं लेकिन एक-दूसरे के प्रति समर्पित नहीं । श्यामा देव को पाने के लिए तड़फ रही है । परंतु देव श्यामा से सिर्फ शारीरिक सुख चाहता है और श्यामा उसकी शारीरिक वासना पूर्ति के लिए असमर्थ है । देव के लिए वह सिर्फ वासनापूर्ति का साधन मात्र है । परंतु पति-पत्नी के दांपत्य जीवन में सिर्फ वासनापूर्ति ही उद्‌देश्य नहीं होता । दोनों के विचार, उद्‌देश्य आदि में समानता न होने के कारण उन दोनों का दांपत्य जीवन दर्द से युक्त है । दोनों के दांपत्य जीवन में तनाव, कुढ़न पैदा हुई है । इसी कारण उनका दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दुख से परिपूर्ण है यह कहना गलत नहीं होगा । एक ओर श्यामा देव को पूर्ण रूप से पाना चाहती है तो दूसरी ओर देव उससे दूर भागने के लिए तरस रहा हैं । इसी कारण देव को आदर्श पति नहीं कहा जा सकता । देव श्यामा से संतुष्ट नहीं है । वह श्यामा से कहता था - "ब्लड़ी हेल ! तुमसे प्यार करना काफी उलझन का काम है ।"[41]

श्यामा ओर देव के दांपत्य जीवन में तनाव पैदा होने का एक महत्त्वपूर्ण कारण था अहं । देव श्यामा पर अपना अधिकार जताना चाहता है । परंतु श्यामा उसे विरोध करती है । इसी कारण दोनों में तनाव और दूरी बढ़ती है और देव श्यामा को अपने दिल से काटने की बात सोचता है । देव के इस बर्ताव को देख श्यामा कहती है -"मैं जानती हूँ, देव से मैंने प्यार नहीं किया । देव ने भी मुझसे प्यार नहीं किया । देव के मन में मुझे लेकर कोई भावना थी, तो केवल अधिकार की । उन्हें दुख भी मुझसे प्यार न पाने का नहीं, अपने अहं को चोट पहुँचने का था ।"[42] परंतु देव श्यामा पर अपना किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं जताता । वह उसे सिर्फ वासनापूर्ति

का साधन बनाकर रखना चाहता है । श्यामा को भी अपनी जिंदगी पर क्रोध आता है । उसे कभी कभी लगता था कि स्वयं उसी में कमी है । ''एक स्त्री के रूप में पुरूष की दृष्टि से वह ऊनी पड़ती है । नहीं तो ऐसा क्यों था कि देव से पहले भी अवसर आने पर किसी पुरूष के साथ कभी उसका स्वाभाविक संबंध स्थापित नहीं हो पाया ?'' [43]

देव और श्यामा का परिचय सिर्फ देह के स्तर तक ही सिमीत था मन के स्तर तक नहीं पहुँच सका । क्योंकि श्यामा का परिचय देव से हर रोज जैसे नए सिरे से होता था । नए सिरे से बातचित की शुरूआत होती थी । एक आकस्मित घनिष्टता तक पहुँचकर एकाएक समाप्त हो जाती थी । इसी कारण देव के साथ रहते हुए भी श्यामा के अंदर विरोध और अन्तराल का नासूर बनता जा रहा था । उसी समय वह देव को विरोध करना चाहती थी । लेकिन देव के सामने वह कमजोर पड़ जाती है । दोनों भी अजनबी की तरह जीवन बिता रहे हैं । दोनों भी इस दांपत्य जीवन से छुटकारा पाना उचित समझते हैं । दोनों यह भी जानते हैं कि इस वैवाहिक जीवन से छुटकारा पाना असंभव है । इसलिए देव श्यामा को सिर्फ शारीरिक वासना पूर्ति के लिए अपनाता है तो श्यामा देव को पूर्ण रूप से अपनाना चाहती है । परंतु उसे देव का सुख नहीं मिलता । वह सोचती है - ''उपलब्धि का एक क्षण होता है । कब कैसे वह क्षण आएगा, कहा नहीं जा सकता । उसे लाने की योजना नहीं बनाई जा सकती एक स्पन्दन के साथ वह क्षण बीत जाता है । परंतु उपलब्धि उतने तक ही नहीं होती । उपलब्धि होती है एक निरन्तर बनी रहने वाली सुरक्षा की भावना के रूप में । परंतु वह भावना देव से मुझे नहीं मिली ।''[44] इस तरह दोनों का दांपत्य जीवन सिर्फ एक-दूसरे को सहते रहना ही बन जाता है ।

देव और श्यामा के विवाह को डेढ़ साल हो चुका है । फिर भी दोनों में किसी भी प्रकार की एकता या स्वभाव में एकरूपता नहीं है । देव श्यामा पर कभी क्रोध प्रकट नहीं करता । परंतु श्यामा को यह स्वभाव पसंद नहीं है । श्यामा देव के साथ डेढ़ साल रह चुकी है परंतु उसकी तमन्ना पुरी करने या उसे प्यार देने में देव असमर्थ है । क्योंकि ब्याह से पहले उसने जिंदगी देख रखी थी , इसलिए उसमें स्त्री-शरीर की भूख नहीं थी । इसी कारण वह श्यामा के शरीर की भूक मिटा न सका । श्यामा के साथ वह सिर्फ एक पति के रूप में ही रहता था और अपनी वासना की पूर्ति करने के लिए ही उसके पास जाता था । ऐसी हालत में श्यामा डेढ़ साल की जिंदगी गुजारती है । विवाह की पहली रात में श्यामा को देख देव की मृत्यु होने लगी थी । उसी समय से श्यामा के अहं को ठेस पहुँची थी । उसे मालूम हो गया कि देव उसे सिर्फ एक साधन के रूप में ही भोगना चाहता है ।

दोनों पति-पत्नी होते हुए भी एक-दूसरे को जो देना चाहते थे वह कृत्रिम था । देव भी इस दांपत्य जीवन में उदास दिखाई देता है । अपने दांपत्य जीवन का वर्णन करते हुए देव कहता है - "हम जिन्हें संबंध कहते हैं, वे केवल एक मंच पर अभिनेताओं के आपसी संबंध हैं, और कुछ नहीं ।"[45]

श्यामा अपने पति के साथ एक पतिव्रता नारी के समान पेश आती हैं । वह देव को पूर्ण रूप से पाने के लिए तरस रही है । परंतु वह देव से अतृप्त है । इतना होते हुए भी वह एक पतिव्रता नारी के समान अपना बर्ताव करती है । देव के जिंदा होते हुए वह किसी अन्य पुरूष के साथ अपना यौन संबंध स्थापित नहीं करती । परंतु देव के पश्चात वह अपने आपको संभल नहीं पाती । वह देव के पश्चात किसी भी पुरूष के साथ प्रेमरहित यौन संबंध स्थापित करने की कामना करती है । देव अपनी पत्नी को सिर्फ शरीर से चाहता है मन से नहीं । वह श्यामा से जिस प्यार की आशा रखता था उसे श्यामा दे न सकी । अपने इस गम को भूलाने के लिए वह शराब का सहारा लेता है । इसी कारण दोनों में दरारें बढ़ती जा रही थीं।

रात में देव को जल्दी नींद आती थी । परंतु श्यामा देव के प्यार की राह देखते - देखते, करवटें बदलती रहती थी । कभी देव श्यामा पर एकाएक उमड़ता और शांत हो जाता था । देव का यह बर्ताव श्यामा को बाजारू लगता था । परंतु वह कभी भी देव से पूर्ण रूप से तृप्त नहीं हुई । श्यामा का स्वभाव भी देव के बिल्कुल उल्टा है । जब देव रूग्ण था उसी समय श्यामा उसकी देखभाल ठीक तरह से नहीं करती थी । उसकी हर माँग का वह मजाक करती थी । दोनों के स्वभावों में भी भिन्नता है । देव तो चला जाता है परंतु श्यामा उसे भूल नहीं पाती । श्यामा के हर व्यवहार का पीछा देव की आत्मा कर रही हैं ऐसा उसे प्रतित होता है । वह उपस्थित न होते हुए भी श्यामा के हर व्यवहार के समय उपस्थित रहता है । इसी कारण श्यामा हैरान हो चुकी है । वह उसमें विलीन होना चाहती है । वह अपने आपको देव में खोने के लिए तरस रही है - "वह जीवित था, तो कितना कुछ था जो मैं उससे चाहती थी और मुझे नहीं मिलता था । वह कभी मुझे अपने इतने पास नहीं लगा कि मैं अपने को उसमें खो सकूँ ।"[46]

इस तरह देव और श्यामा एक-दूसरे से अधुरे हैं । क्योंकि दोनों को एक-दूसरे से जो चाह थी वह उन्हें कभी नहीं मिली । श्यामा अपने अहं को ठेंस पहुँचने के बाद विद्रोह करने के लिए तैयार हो जाती है । किंतु वह देव को ठुकरा भी नहीं सकती । दोनों भी अपना दांपत्य जीवन सिर्फ देव की माँ के इच्छा की खातिर ही जी रहे हैं ।

दोनों जीवन तो ढो रहे हैं परंतु दोनों के दिलों का मिलन नहीं हो पाता । श्यामा को पुरूष के जिस प्यार की खोज थी वह प्यार उसे देव के होते हुए भी और न होते हुए भी नहीं मिला ।

दांपत्य जीवन में पति-पत्नी का दांपत्य जीवन सुखी होने के लिए दोनों का एक-दूसरे के प्रति समर्पित होना आवश्यक है । परंतु देव और श्यामा में समर्पण की भावना का अभाव है । दोनों में अहं ज्यादा है । दोनों पति-पत्नी इस जीवन से ऊब गए है । इसी कारण दोनों का दांपत्य जीवन दु:खमय बन गया है । दोनों पति-पत्नी के दांपत्य जीवन में हमेशा के लिए अन्तराल बना हुआ है जिसका चित्रण राकेश जी ने बड़ी सूक्ष्मता से किया है ।

3.3.2प्रो. कुमार और उनकी पत्नी का दांपत्य जीवन -

यह 'अन्तराल' उपन्यास की दूसरी दंपत्ति है । प्रो. कुमार इस उपन्यास का नायक है । वह नित्यानंद कॉलेज में दर्शन विभाग का अध्यक्ष है । उसका व्यक्तित्व आकर्षक दिखाई देता है । क्योंकि उसकी ओर अनेक लड़कियाँ खुद ही आकर्षित हो जाती थी । ऐसी ही एक लड़की थी लता । वह कुमार की ओर आकर्षित हो जाती है । परंतु माँ के डर से कुमार के अलावा किसी अन्य से शादी करती है । कुमार दु:खी हो जाता है । और लता का रिक्त स्थान भरने का काम श्यामा करती है । वह भी बहुत दिन उसका साथ नहीं दे पाती । वह चली जाती है । तब खाली जगह भरने का महत्त्वपूर्ण काम एक और स्त्री करती है । वह है प्रो. कुमार की पत्नी जिसके नाम का उपन्यास में कहीं भी उल्लेख नहीं हैं ।

सिर्फ चार महीने पहले ही कुमार का उससे परिचय हो चुका था । परंतु जब विवाह की बात चलती है तब वह कहता है कि - "मेरी इस संबंध में रूचि नहीं हैं ।" परंतु पत्नी द्वारा लिखे पत्रों की भाषा शैली देख वह विवाह के लिए राजी हो जाता है । परंतु जब उसे पता चलता है कि यह भाषा शैली उसकी नहीं है । तो उसे पूर्व प्रेमियोंने उन्हें पहली भेंट में दि गई अनेक पुस्तकों की हैं । तब उसे पश्चाताप होता है । प्रो. कुमार की पत्नी ने अपने पूर्व प्रेमी को अपने सामने नीचा दिखाने के लिए ही कुमार से शादी की थी । उसके शादी करने का कारण बताते हुए कुमार कहता है - "उसका पक्ष इतना ही था कि किसी ने बहुत दिन लटका रखने के बाद उससे कन्नी काट ली थी और वह जल्दी से जल्दी ब्याह करके उस व्यक्ति को छोटा करना चाहती थी ।"[47] कुमार की पत्नी अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफल हो जाती है । उसके अलावा उसके मन में कोई भावना नहीं थी । परंतु उसका

यह दांपत्य जीवन आखिर तक सफल नहीं होता । कुमार की पत्नी कुमार को अन्त तक साथ न देकर बीच में ही उसे अकेला छोडकर चली जाती है ।

कुमार का दांपत्य जीवन सुखी नहीं है । वह अपने दांपत्य जीवन का वर्णन करता है - ''मुझे उससे सिवाय शरीर के कुछ नहीं मिला । उसे भी मुझसे केवल इतना ही मिला होगा । केवल इतने के भरोसे साथ साथ जीवन वह शायद ढो सकती थी । मुझसे नहीं ढोया गया ।''[48] इस प्रकार वह अपने संबंध को तोड़ डालता है और अकेला ही जिंदगी गुजारता है । श्यामा जब पूछती है कि तुमने शादी क्यों कि थी ? वह उत्तर देता है -सिर्फ इसलिए कि यह भी करके देख लिया जाय, या मन में अपने को उस जिंदगी के लिए तैयार कर लिया था । आगे श्यामा उसे पूछती है क्या तुम्हारा पत्नी के साथ शरीर के सिवाय और कोई संबंध नहीं था ? तो कुमार जवाब में कहता हैं - ''वह था केवल एक डर । बात अपने तक रहे किसी को पता न चले । जितना सड़ना हैं, अंदर ही अंदर सड़ो । जो जहर चखना है, अंदर ही अंदर चखो । उसी सड़ाँध और जहर से बच्चें पैदा करो और उन्हें भी उसी ढंग से जीने की शिक्षा दो । अपनी स्वाभाविकता के साथ विश्वासघात करो । और ऐसा करने की परम्परा को बनाए रखो ।''[49]

कुमार का अपनी पत्नी के साथ निभ न सका । वह कहता हैं - ''ऐसे जीवन से कही आसान है आठ घेटे मशीन की तरह दफ्तर में काम करना और नींद आने तक किसी न किसी शोर में मन को डुबा रखना ।''[50] इसी कारण दोनों के दांपत्य जीवन में दरार पड़ रही है । कुमार का अपनी पत्नी के साथ घर बसाने का सपना सपना ही रह जाता है । दोनों भी अपने - अपने उद्‌देश्य पूर्ति के लिए शादी करते हैं परंतु अपना दांपत्य जीवन ढोने में असमर्थ दिखाई देते हैं । दोनों पति - पत्नी होते हुए भी एक - दूसरे को शरीर के सिवाय कुछ नहीं दे पाते ।

कुमार और उसकी पत्नी इस दांपत्य जीवन से ऊब गए हैं । कुमार अपनी जिंदगी का वर्णन इस प्रकार करता है । '' यह जिंदगी जानवरों से भी बदतर नहीं कि जिसे आदमी अंदर से नफरत करे, उससे साथ रात - दतन एक घर में रूँधा रहे ? जिससे शरीर की गन्ध तक से जी मितलाए उसके साथ एक बिस्तर में सोने का नाटक करता रहें ?''[51] इससे ज्ञात होता हैं कि दोनों भी नाटकीय जिंदगी जी रहें हैं । कुमार को यह जिंदगी जानवरों से बदतर लगती है ।

कुमार और उसकी पत्नी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही पति -पत्नी बनकर जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं । अपनी तमन्ना पूरी होने के बाद उन दोनों पति-पत्नी को दांपत्य जीवन काँटे की तरह चुभता है । दोनों का दांपत्य जीवन तनाव ग्रस्त बन गया है, इसलिए दोनों भी एक - दूसरे से छुटकारा पाना चाहते हैं । अगर दांपत्य जीवन को सफल बनाना है तो पति-पत्नी दोनों में प्यार, भरोसा, दोनों के उद्‌देश्यों मे एकता आदि बातों का होना आवश्यक है । परंतु दोनों सिर्फ शरीर की भूख मिटाने के लिए ही जी रहें हैं । एकत्र जीवन जीते हुए जानवर जैसा दिखाई देता है । कुमार को यह जानवरों की जिंदगी जीना अच्छा नहीं लगता । फिर भी यह जिंदगी जीने के लिए वह विवश है । इसी तरह दोनों में तनाव बढ़ जाता है और दोनों एक-दूसरे से छुटकारा पाकर अलग - अलग जिंदगी जीने लगते हैं । इस प्रकार इन दोनों का दांपत्य जीवन भी कृत्रिम दिखाई देता है । इन दोनों का दांपत्य जीवन अंतराल बन गया है ।

3.3.3प्रो. मलहोत्रा और मिसेस मलहोत्रा का दांपत्य जीवन -

यह इस उपन्यास की तीसरी दंपत्ति है । प्रो. मलहोत्रा एक अध्यापक है जो शिवालिक कॉलेज में अध्यापन का काम करते है । दोनों के आचार - विचारों में भिन्नता है । इसलिए दोनों कभी पार्टीयों में एक-दूसरे के साथ हिस्सा नहीं लेते थे । अकेले - अकेले ही जाते थे । दोनों पति-पत्नी एक घर में रहते हुए भी आपस में कभी बातें नहीं करते । उन दोनों का दांपत्य जीवन तनाव ग्रस्त बन गया हैं । वे दोनों इस जीवन से ऊब गए हैं । अपनी जिंदगी की यह दशा श्यामा को बताते हुए प्रो. मलहोत्रा कहते हैं -"मुझे अपनी पत्नी से जो चाहिए था वह उन्हें कभी नहीं मिल पाया । विवाह के दिन से वह अपनी ही एक दुनिया में उलझी रहीं हैं, उनके लिए एक मांस की पुतली के अतिरिक्त अभी कुछ नहीं बन पाई ।" [52] इस प्रकार दोनों पति-पत्नी होते हुए भी अजनबी की तरह बर्ताव करते हैं ।

प्रो. मलहोत्रा अपनी बीवी को नीचा दिखाने के लिए साली से ही ज्यादा बातें करते हैं । पार्टी में जाते समय पत्नी को न लेकर साली को ही अपने साथ ले जाते हैं । प्रो. मलहोत्रा की यह अदा मिसेस मलहोत्रा को पसंद नहीं है । इसलिए वह परेशान है । प्रो. मलहोत्रा मिसेस मलहोत्रा से शारीरिक संबंधों में अतृप्त दिखाई देते हैं । इसी कारण वे साली श्यामा के प्रति आकर्षित हो चुके हैं । वे उसकी ओर इतने आकर्षित हो चुके हैं कि उसके बिना रह नहीं सकते । साली अपने जीजाजी (प्रो. मलहोत्रा) के बर्ताव के बारें में कहती है - "शादी के बाद जब

पहली बार हमारे यहाँ आये थे ... तब मैं बारह तेरह साल की थी ... तब भी जिस तरह मुझे अपने साथ सठाकर बात किया करते थे ।"[53] इस प्रकार वे अपनी पत्नी से अतृप्त दिखाई देते हैं ।

मिसेज मलहोत्रा भी अपने पति के इस बर्ताव पर खुश नहीं है । वह अंदर ही अंदर कुढ़ती जा रही है । उनके बर्ताव के बारें में श्यामा ने कहा है -"उन दोनों का आपसी बरताव भी ऐसा है जैसे मिलकर अपने बच्चों के लिए एक होस्टल चला रहे हों वे ।"[54] प्रो. मलहोत्रा भी अपनी पत्नी पर खुश नहीं हैं । वे अपनी पत्नी को सिर्फ भोग की वस्तु मानते हैं । उनका उसके साथ वासना के अतिरिक्त और कोई संबंध नहीं है । वह उसे दासी मानते हैं ऐसी दासी जिससे कभी - कभी वह अपनी काम पिपासा शांत करते हैं । साली के साथ यौन संबंध स्थापन करने की कामना रखे प्रो. मलहोत्रा को अपने दांपत्य जीवन में कैसे सफलता प्राप्त होगी ? इसी कारण वे पत्नी से छुटकारा पाना चाहते हैं । पत्नी पति के बर्ताव से उदास है । वह भी उससे छुटकारा पाना चाहती है । लेकिन दोनों अलग नहीं होते । इस प्रकार दोनों एक-दूसरे से मुक्ति पाना चाहते हैं । स्पष्ट है कि दोनों का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय बन गया है ।

3.3.4 प्रि गोपाल और मिसेस गोपाल का दांपत्य जीवन -

'अन्तराल' उपन्यास की यह चौथी दंपत्ति है । मि. गोपाल आर्ट कॉलेज में प्रिन्सिपल है । वे वहाँ अंग्रेजी कविता पढ़ाते थे । शृंगारिक कविताएँ पढ़ाते समय उनकी आँखे श्यामा जैसी किसी -न -किसी अन्य लड़की से टकरा जाती थी । प्रि. गोपाल की यह आदत बुरी थी कि वे एक शादीशुदा आदमी होते हुए भी अपने क्लास की लड़कियों की तरफ आकर्षित होते हैं । इससे यह ज्ञात होता है कि गोपालजी का दांपत्य जीवन सुखी नहीं है । अपनी पत्नी के होते हुए भी वे लड़कियों की ओर आकर्षित हो जाने के पीछे उनकी अतृप्त कामवासना या पत्नी का प्यार न मिलना आदि कारण हो सकते है ।

गोपाल जी लड़कियों की ओर सिर्फ देखते ही नहीं तो कई लड़कियों को वे अपने घर ले आने का फैसला भी करते थे । एक दिन वे अपनी छात्रा श्यामा को घर बुलाते हैं । श्यामा का वहीं पहुँचना उनकी पत्नी को अच्छा नहीं लगता । श्यामा का गोपाल जी से बातें करने का ढंग देख कर मिसेस गोपाल जी को ईर्ष्या होने लगती है वह श्यामा की बहन से कहती है - "यह लड़की इतनी छोटी उम्र में जिस तरह बात करती है, उससे मुझे

इससे ईर्ष्या होती है ।"[55] इस प्रकार अपनी पत्नी के सामने किसी दूसरी लड़की से बातें करनें में वे किसी भी तरह का भय या संकोच महसूस नहीं करते ।

प्रि. गोपाल अब इतने आगे बढ़ चुके हैं कि एक दिन अपनी छात्रा श्यामा को जन्म दिन का उपहार देने के लिए अपने घर बुलाते हैं । उस समय वे घर में अकेले ही रहते हैं । श्यामा आने के पहले उन्होंने अपने कमरे की खिड़कियाँ बन्द करके कमरे में अंधेरा कर रखा था । श्यामा वहाँ पहुँचते ही वे उसे बाहों में लेकर उसके होठों पर अपने होंठ रखकर उसे अंदर के कमरे में ले जाने की चेष्टा करते हैं । वे उसके साथ यौन संबंध प्रस्थापित करना चाहते हैं । गोपाल जी के इस बर्ताव से यह ज्ञात होता है कि गोपाल जी का आकर्षण पत्नी की अपेक्षा लड़कियों की ओर ज्यादा है । वे एक अध्यापक होते हुए भी अपनी छात्राओं को अपने मोहजाल में फँसाकर अपनी काम वासना पूरी करने का असफल प्रयत्न करते हैं । गोपाल जी की पत्नी भी उनके इस बर्ताव से दु:खी है । उसे अपने पति का आचरण बुरा लगता है ।

गोपाल जी की पत्नी ही नहीं तो संसार की कोई भी पत्नी अपने दांपत्य जीवन में किसी अन्य स्त्री का आगमन बर्दाश्त नहीं कर सकती । वह उसे दूर करने का प्रयास करती हैं । उपर्युक्त उदाहरण से ज्ञात होता है कि दोनों पति - पत्नी काम तृप्ति में अतृप्त हैं । इसलिए मिस्टर गोपाल अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए लड़कियों का सहारा लेना चाहते हैं । लड़कियों की ओर आकर्षित होते समय उन्हें अपने पत्नी का डर नहीं लगता । इस प्रकार अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए वे अपना दांपत्य जीवन खतरें में डालने के लिए भी तैयार हो जाते हैं । इसी कारण दोनों पति-पत्नीयों का दांपत्य जीवन दु:खपूर्ण बन गया है ।

राकेश जी ने अपना उपन्यास 'अन्तराल' में स्त्री पुरूष के दांपत्य जीवन की नयी खोज की है । इस उपन्यास के पात्रों के चरित्र एवं बर्ताव देख डॉ. उर्मिला मिश्र ने कहा है - " जीवन में शारीरिक अपेक्षाओं के अलावा भी कुछ ऐसी अपेक्षायें होती हें जिसको पाने के लिए मानव नियतिग्रस्त होता है ।"[56] उपर्युक्त सभी के दांपत्य जीवन को देखने के बाद पता चलता है अधिकतर पात्र तनाव से ग्रस्त होकर अपना जीवन जी रहें हैं ।

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि इस उपन्यास में चित्रित सभी का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय अधिक है ।

3.4 काँपता हूआ दरिया में चित्रित दांपत्य जीवन -

3.4.1खालका और बेगम का दांपत्य जीवन -

इस उपन्यास का नायक खालका एक निम्न वर्गीय परिवार का पात्र है । वह कश्मीर का एक हाँजी है । उसका सारा परिवार भी उसके साथ दरियाँ में ही डूँगे पर रहता है । बेगम खालका की पत्नी है । यह अपने पिता की अकेली संतान थी । उसका पिता भी डूँगे हाँकने का काम करता था । बेगम और खालका की उम्र में ज्यादा फर्क न होने पर भी खालका अपने आप को बेगम के सामने काफी बड़ा और पुराना - सा महसूस करता था ।

बेगम और खालका के स्वभाव में भी बहुत भिन्नता थी । खालका में जितनी थकान है, बेगम में उतना ही आत्मविश्वास है । बेगम खुली - खुली जिंदगी जीना चाहती है । वह खुलेआम हँसती है, खुलेआम किसी से भी बातचीत करती है । बेगम के इस खुलेआम स्वभाव को देख खालका उसमें साझीदार बनना चाहता है, उसके साथ खुलेआम जीने का निश्चय करता हैं परंतु उसमें उसे सफलता नहीं मिलती । 'उसकी जबान और हाथ -पैर बेगम के सामने जकड़े से रहते ।' [57] इस प्रकार दोनों पति - पत्नी के स्वभाओं में भिन्नता नजर आती है । खालका में प्रतिकार करने की शक्ति भी दिखाई नहीं देती है कारण वह अपने दामाद द्वारा पिटा जाता है ।

बेगम और खालका दोनों पति-पत्नी तो हैं लेकिन यौन संबंधों में असंतुष्ट हैं । जब रात के समय खालका बेगम के पास सो जाता है तो चुपचाप पड़ा रहता है । परंतु ''रात को साथ लेटे हुए बेगम आवेश में उसके होठों को चूमने लगती, तो कोमल शरीर के रोमांचक आक्रमण को सहते और कहीं अंदर में उसमें सुख पाते हुए भी वह अपने को सिकुड़ते हुए पाता । ''[58] बेगम ने दो बेटियों को जन्म दिया था परंतु उसे एक बेटे की चाह थी । यह बताती है कि जब तुम कलकत्ते गए थे तो तुमने कुछ भी नहीं बताया था । वह कहती है - ''तुम्हें अगर छोड़कर जाना ही था, तो कम-से-कम तुम इतना तो करते कि मेरी रखवाली के लिए अपना एक वारिस तो मुझे दे जाते । .. पर तुम देकर गए मुझे सिर्फ बोझ ... दो - दो लड़कियों का .. ।''[59] एक बार जब खालका की बाँह बेगम के गिर्द कस नहीं रहीं थीं तो बेगम ने खुद उसे अपने गिर्द कस लेना चाहा । पर खालका के हाथ ढीले ही पड़ते हैं । वह अपने आपको उससे अलग कर देता है । तब खालका अपनी आँखें दूसरी तरफ किए कहता है कि ''मैं आज इस लायक नहीं रहा कि तुमसे .... ।''[60] इससे ज्ञात होता है कि बेगम और खालका यौन संबंधों से संतुष्ट नहीं थे ।

कभी - कभी उन दोनों में संदेह के कारण भी झगड़ा होता रहता था । बेगम खुलेआम जीवन जीती थी । वह किसी भी व्यक्ति के साथ खुलेआम बातचीत करती घुल मिल जाती थी । जब वह कादिर को अपने घर रखती है तो रमजान उनपर संदेह करता है । तब रमजान और खालका में झगड़ा शुरू होता है और खालका वहाँ से चला जाता हैं । परंतु बेगम पिता के घर जाकर अपने आपको पवित्र रखती है । एक बार जब टुरिस्ट खान खालका के परिवार में घुलमिल जाता है तो खालका भी उसपर शक करता है । परंतु जब बेगम उसे समझाती है तब वह शांत हो जाता है ।

एक पुरूष होते हुए भी खालका जो कुछ करना है या नहीं इसका निर्णय खुद नहीं करता । वह इसे बेगम पर छोड़ता है । जब बेगम के पिता के डूँगे को बेचने की बात चलती है तो वह यह काम बेगम पर छोड़ता है । जब परिवार पर आर्थिक संकट की स्थिति आती है तो वह खुद नौकरी तथा काम के लिए बाहर जाना चाहता है । तब बेगम उसे मना कर खुद बाहर जाने का फैसला करती है ।

इस प्रकार दोनों के विचारों में भिन्नता है और एक-दूसरे को संदेह से देखना आदि के कारण उन दोनों का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय ही ज्यादा है ।

3.4.2कादिर और नजमा का दांपत्य जीवन -

कादिर नजमा का सगा संबंधि था इसी कारण उनकी माँने उन दोनों की शादी का प्रस्ताव पारित किया था । नजमा खालका तथा बेगम की बड़ी बेटी थी । उसका पति कादिर हाँजी होने के कारण बोट चलाने का ही काम करता था । दोनों की शादी सिर्फ नाम के लिए ही थी । दोनों में कभी भी प्यार की भावना उत्पन्न नहीं होती थी । उन दोनों में हर वक्त झगड़ा ही चलता था ।

नजमा अपने दांपत्य जीवन पर जरा भी सुखी नहीं है । वह हर वक्त अपने माँ बाप के सामने रोती रहती हैं । इतना ही नही तो कादिर अपने बीवी को ही नहीं तो अपने ससुर को भी पिटता था । कादिर की यह मारपीट नजमा को अच्छी नहीं लगती । तब वह अपने पिता के घर रहने आती है । एक बार जब वह अपने पिता के घर रहने आती है तब कादिर कहता है - ''नजमा को तलाक देकर बच्चों को अपने पास रखेगा, नजमा को उनकी शक्ल तक देखनी नसीब न होगी ।''[61]

उपन्यास के अंत में वह अपने पति के घर रहती है यही ज्ञात होता है । इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उनका दांपत्य जीवन भी दु:खमय ही है ।

3.4.3एलिस का दांपत्य जीवन -

एलिए एक वर्तमान युगीन कॉलगर्ल है । जो शाह साहब मुहम्मद अनवर के यहाँ आया की नौकरी करती है । वह नौकरी तो सिर्फ दिखावे के लिए करती है । एलिस का "रंग काला होते हुए भी उसके गदराए शरीर में अपना ही एक आकर्षण था । " [62] वह खूब बन ठनकर रहती थी । दूसरे नौकर कहते थे कि "नौकरी तो उसके लिए बहाना है । असली आमदनी उसे फौजी बैरकों से है ।"[63]

वह अपने शादी के बारे में खालका से कहती है - "मैंने भी एक बार शादी की थी, दो महीने के लिए ।"[64] इससे ज्ञात होता है कि उसने शादी तोकि थी परंतु उसके पति के साथ उसकी पटती नहीं थी । उसका पति उसे हर वक्त डाँटता था और कभी - कभी घर के अंदर बंद रखता था । इसी कारण उसने उसे तलाक दे दिया था । इससे ज्ञात होता है कि एलिस का दांपत्य जीवन भी सुख की अपेक्षा दु:खमय ही था ।

उपर्युक्त विवेचन के बाद निष्कर्षत: कहा जा सकता हे कि इस उपन्यास में चित्रित सभी दम्पत्तियों का दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय ही ज्यादा है ।

निष्कर्ष -

मोहन राकेश के उपन्यासों में स्त्री पुरूष के संबंधों की चर्चा पर्याप्त मात्रा में है । इन संबंधों में से एक संबंध है दांपत्य जीवन का । राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष तक पहुँता हूँ कि उनके उपन्यासों में चित्रित सभी दम्पति अपना दांपत्य जीवन किसी न किसी कारण तनावपूर्ण, घुटनयुक्त और दु:खद जी रहे है ।

उनका पहला उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' में चित्रित हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन आर्थिकता से संपन्न है । परंतु दोनों पति-पत्नी के आचार-विचार तथा दोनों में अहं होने के कारण उनका दांपत्य जीवन खोखला बन गया है । वे दोनों एक - दूसरे से छुटकारा पाने के लिए तरस रहे हैं । अपने आपको अकेले में 'अंधेरे बंद कमरे' में बंदिस्त करना चाहते हैं । दूसरी ओर शुक्ला जैसी स्त्री सुरजीत जैसे गुंडे प्रवृत्तिवाले व्यक्ति से

विवाह कर अपना दांपत्य जीवन अच्छी तरह से जी रहीं है । राकेश जी ने दिल्ली जैसे महानगर के उच्च शिक्षित व्यक्तियों के दांपत्य जीवन का चित्रण किया है । जिससे स्पष्ट होता है कि दिल्ली जैसे महानगर के व्यक्ति उच्च शिक्षित होते हुए भी अपने अहं के कारण दु:खमय दांपत्य जीवन बिताते हैं ।

उनका दूसरा उपन्यास 'न आने वाला कल' के सभी दंपतियों का दांपत्य जीवन एक-दूसरे के समान दिखाई देता है । इस उपन्यास के सभी दंपति एक दूसरे से छुटकारा पाकर आने वाले कल की प्रतिक्षा करते हैं । वह 'कल' कभी- भी आने वाला नहीं हैं । इस उपन्यास में आर्थिक अभाव के कारण एकाध स्त्री का जीवन किस प्रकार बरबाद हो जाता है इसका चित्रण किया है । सिर्फ माँ बाप की आर्थिक हालत के कारण ही शारदा जैसी नवयुवती को कोहली जैसे अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ शादी करनी पड़ती है । परंतु वह उसके व्यवहार या बर्ताव पर खुश नहीं है । पति की संदेह युक्त दृष्टि के कारण उसकी पिटाई होती है । वह अपने पति से इतनी तंग आ चुकी है कि वह उससे दूर भागना चाहती है । टोनी व्हिसलर जैसे आर्थिकता से संपन्न व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से संपन्न होते हुए भी पति-पत्नी के आचार-विचारों में भिन्नता होने के कारण एक दूसरे से अपनी मुक्तता करना चाहते हैं । इससे ज्ञात होता है कि सभी दांपति अपने आपको मुक्त करना चाहते हैं । इस उपन्यास में चित्रित दंपत्ति बम्बई के स्कूल में नौकरी करते हैं । राकेश जी ने इस उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन का चित्रण कर यह दिखाने का प्रयास किया हैं कि बम्बई जैसे शहर में रहने वाले दंपत्ति आर्थिक समृद्धि के होते हुए भी तथा आर्थिक अभाव के कारण अपना दांपत्य जीवन सुख की अपेक्षा दु:खमय ही बीता रहे हैं । इस प्रकार इस उपन्यास के पात्र एक-दूसरे से छुटकारा पाने की चाह रखकर जिंदगी बिताते हुए दिखाई देते हैं ।

राकेश जी का तीसरा उपन्यास 'अन्तराल' में चित्रित दांपत्य जीवन भी सुख की अपेक्षा दु:खमय ही अधिक है । श्यामा जैसी स्त्री अपने पति को पूर्ण रूप से पाना चाहती है । परंतु वह अचानक चल बसता है तब उसे सहारा देने के बदले उसके जीजाजी उससे अपनी काम वासना तृप्त करने के लिए तरस रहे हैं । श्यामा कुमार के साथ नामहीन संबंध स्थापित करने के लिए तरस रही है और कुमार अपनी पत्नी को पूर्ण रूप से पाने में असफल हो चुका है । इससे ज्ञात होता है कि इस उपन्यास के सभी पात्र एक-दूसरे का सहारा लेना चाहते हैं । क्योंकि वे अपने दांपत्य जीवन में दु:खी हैं । सब के सब नाटकियता पूर्ण जिंदगी जी रहे हैं । इससे ज्ञात होता है कि इस उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन भी दु:खमय तथा कुंठा से युक्त हैं ।

राकेश जी का चौथा प्रकाशित उपन्यास 'काँपता हुआ दरिया' में चित्रित दांपत्य जीवन भी ज्यादातर सुखी नहीं दिखाई देता । हर एक के अपने विचार तथा विचारों में भिन्नता और आधुनिक जीवन जीने की आकांक्षा के कारण इस उपन्यास में चित्रित दांपत्य जीवन भी ज्यादातर दु:खी ही दिखाई देता है ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में भी राकेश ने सुख की अपेक्षा दु:खमय दांपत्य जीवन का ही ज्यादा चित्रण किया है ।

अंत में निष्कर्ष के रूप में इतना ही कहा जा सकता है कि राकेश जी के उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन दु:ख से परिपूर्ण हैं । प्रो. मलहोत्रा तथा हरबंस जैसे व्यक्ति अपने दांपत्य जीवन में पूर्णता असफल हैं । प्रि. गोपाल जैसे आदमी आज के शिक्षा जगत की एक विकृत व्यवस्था हैं जो अपनी छात्राओं को भोगना चाहते हैं । इसके चित्रण में राकेश जी को पर्याप्त सफलता मिली हैं ।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

1. ओम प्रभाकर - कथाकृति मोहन राकेश, पृष्ठ - 157
2. डॉ. कुसुम पुरी / अंसल - आधुनिक हिंदी उपन्यासों में महानगर, पृष्ठ - 105
3. नेमिचंद्र जैन - अधूरे साक्षात्कार, पृष्ठ - 131
4. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 158
5. डॉ. हेमेंद्र कुमार पानेरी - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास - 'मूल्य संक्रमण', पृष्ठ -172
6. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 317
7. डॉ. सुमित्रा त्यागी - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन, पृष्ठ -172-173
8. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 98
9. वही, पृष्ठ - 189
10. वही, पृष्ठ - 136
11. रामदरश मिश्र - हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, पृष्ठ - 146
12. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ -310
13. वही, पृष्ठ - 319
14. वही, पृष्ठ - 310-311
15. डॉ. राजेंद्र प्रताप - हिंदी उपन्यास : तीन दशक, पृष्ठ - 68
16. डॉ. स्वर्णलता - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमी, पृष्ठ -102-103
17. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 134

18. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृष्ठ - 153

19. उषा मंत्री - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ, पृष्ठ -206-207

20. सं. इंद्रनाथ मदान - हिंदी उपन्यास पहचान और परख, पृष्ठ -226

21. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ -14

22. वही, पृष्ठ -8

23. वही, पृष्ठ -25

24. वही पृष्ठ -15

25. वही, पृष्ठ -16

26. वही, पृष्ठ -24

27. ओम प्रभाकर - कथाकृती मोहन राकेश, पृष्ठ -63

28. मोहन राकेश - न आने वाला कल, पृष्ठ -44

29. वही, पृष्ठ -44

30. वही, पृष्ठ -151

31. वही, पृष्ठ -151

32. वही, पृष्ठ -151

33. वही, पृष्ठ -152

34. वही, पृष्ठ -152

35. वही, पृष्ठ -145

36. वही. पृष्ठ -97

37. चंद्रकांत बांदिवडेकर - आधुनिक हिंदी उपन्यास सृजन और आलोचना, पृष्ठ -37

38. मोहन राकेश - अन्तराल, पृष्ठ -29

39. वही, पृष्ठ -71

40. वही, पृष्ठ -147

41. वही, पृष्ठ -145

42. वही, पृष्ठ -126

43. वही, पृष्ठ -147-148

44. वही, पृष्ठ -99

45. वही. पृष्ठ -214

46. वही, पृष्ठ -70

47. वही, पृष्ठ -200

48. वही, पृष्ठ -201

49. वही, पृष्ठ -202

50. वही, पृष्ठ -202

51. वही, पृष्ठ -202

52. वही, पृष्ठ -126

53. वही, पृष्ठ -50

54. वही, पृष्ठ -30

55. वही, पृष्ठ -149

56. उर्मिला मिश्र - आधुनिकता और मोहन राकेश, पृष्ठ -104

57. सं. जयदेव तनेजा - एकत्र, पृष्ठ -307

58. वही, पृष्ठ -307

59. वही, पृष्ठ -344

60. वही, पृष्ठ -344

61. वही, पृष्ठ -303

62. वही, पृष्ठ -311

63. वही, पृष्ठ -311

64. वही, पृष्ठ -312